प्रथम अध्याय

कमलेश्वर जीवनवृत्त व कृतित्व

जन्म 6 जनवरी 1932 ई.।

माता शांति देवी **पिता** जगदंबा प्रसाद सक्सेना।

भाई-बहन सात भाई बहन कोई नहीं।

जन्म स्थान 299 कटरा कस्बा मैनपुरी उत्तर प्रदेश में।

शिक्षा प्रारम्भिक शिक्षा मैनपुरी में तथा बारहवीं से लेकर उच्च शिक्षा इलाहाबाद में।

पत्नी गायत्री देवी।

बच्चे एक बेटी मानू।

पारिवारिक परिस्थिति बिखरी हुई पुरानी जमीदारी जर्जर अवस्था में।

राजनीति मैनपुरी से लेकर इलाहाबाद तक के जीवन में राजनीतिक सुरुचि दिखाई पड़ती है।

जीवन पड़ाव मैनपुरी, इलाहाबाद, दिल्ली, मुंबई होते हुए पुनः दिल्ली में निवास।

उपनाम पर्यवेक्षक, संजय, हरिश्चंद्र, सौमित्र सिन्हा, विप्रगोस्वामी इत्यादि।

सम्मान साहित्य अकादमी, पद्मभूषण।

मृत्यु 27 जनवरी 2007 दिल्ली फरीदाबाद।

सामान्य जीवन परिचय:

सामान्य मनुष्य के जीवन को, उसके संघर्ष को, उसकी संवेदना को, उसकी स्थितियों-परिस्थितियों को, उसके आर्थिक बदहाली को, छीड़ होती मनुष्यता को, टूटते संबंधों को, नए स्थापित संबंधों को तथा यथार्थ व युगबोध को अपने लेखन के केंद्र में स्थापित करने वाले, अपने वैचारिकी से जन सामान्य का प्रतिपक्ष रखने व रचने वाले, अपने लेखकीय दायित्व के प्रति सतर्क, सावधान व संवेदनशील, जिम्मेवार व प्रतिबद्ध कथाकार कमलेश्वर का जन्म 6 जनवरी 1932 ई. को उत्तर प्रदेश, मैनपुरी के कटरा कस्बा में एक सामान्य परिवार में हुआ था। कमलेश्वर के पिता जी का नाम जगदंबा प्रसाद सक्सेना था। पिता जगदंबा प्रसाद सक्सेना जी की दो शादियाँ हुई थी। जिसमें दूसरी पत्नी शांति देवी जी के कोख से होनहार बालक कमलेश्वर का जन्म हुआ था। माता शांति देवी बड़ी ही धार्मिक विचारों वाली व शांत स्वभाव की महिला था। जिन पर वैष्णव संस्कारों का पूर्ण प्रभाव था। माँ के वैष्णव विचारों का गहरा प्रभाव बालक कमलेश्वर पर भी पड़ा। माँ की छत्रछाया व स्नेह कमलेश्वर जी को भरपूर मिला, किन्तु पिता का साया इनके सर से बाल्यावस्था में ही उठ जाता हैं। पिता की मृत्यु के कुछ वर्षों के अंतराल पर बड़े भाई सिद्धार्थ भी इन्हे अकेला छोड़कर इस दुनिया से विदा हो जाते है। इस तरह कमलेश्वर बहुत कम उम्र में ही पिता व भाई के स्नेह से वंचित हो जाते हैं। इस स्नेहवंचना के साथ ही बालक कमलेश्वर पर घर की जिम्मेवारियों का भार आ गिरता है। यहाँ से छोटी उम्र में बड़ी जिम्मेवारियों के निर्वहन का दायित्व संभाल। और जैसा बन पड़ा उसे पूरी शिद्दत से आयी हुयी जिम्मेवारियों को कमलेश्वर उठाने की कोशिश करते है। फिर यह क्रम जीवन भर चलता रहा। और कमलेश्वर आर्थिक संघर्ष जीवन भर करते रहे। और सच को कहने, लिखते व बोलते रहे। अपने लेखकीय जिम्मेवारियों का निर्वहन करते रहे। लोकतंत्र में लोकहित का प्रतिपक्ष रचते रहे। और कभी भी वे सत्ताकामी नहीं हुए। बल्कि सत्ता से

टकराते रहे। उसके समक्ष डटकर खड़े रहे। उसके न्याय-अन्याय पर बोलते रहे। उनका किसी सत्ता से कोई राग-द्वेष नहीं था। उनका राग और द्वेष सत और असत से था। और इसके ही पक्ष और प्रतिपक्ष को वे आजीवन लिखते रहे। उसमे रचते व बसते रहे। उसे बचाते व ध्वंस करते रहे। इस तरह कमलेश्वर का यह लेखकीय व्यक्तित्व बनाता है।

कमलेश्वर का बचपन आर्थिक कठिनाइयों व जिम्मेवारियों से भरा हुआ था। अपने बचपन की स्थिति का जिक्र करते हुए कमलेश्वर जी स्वयं करते है कि, "अमीर कहे जाने वाले घर में गरीब की तरह रहना, खाना खाकर भी भूखा उठना, अकुलाहट भरे दुखों के बीच हँस सकना, बच्चा होते हुए वयस्कों की तरह निर्णय लेना मेरी मजबूरी बन गयी थी।" यह बयान कमलेश्वर के जीवन के प्रारम्भिक अभाव को बयां करने के साथ-साथ उनकी सूझबूझ, उनके स्वभाव को भी बता रहा है कि बालक कमलेश्वर का स्वभाव व सूझबूझ क्या व कैसी थी। जीवन की मार व्यक्ति को समय से पहले वयस्क बना देती है। सहन से अधिक असहनीय बोझ भी उठवा देती है। कमलेश्वर भी अपने बचपन इन सब अछेल हमलों से घिरे रहे। कष्ट सहते व उठाते रहे। पर वे अपना हर काम बड़े ही सूझबुझ के साथ करने वाले व्यक्ति है। इनका यह व्यक्तितत्व आजीवन यह लोहा मनवाया कि वे अपने परिस्थितियों से घबराने व हार मनाने वाले नहीं बल्कि उनसे संघर्ष करने आगे वाला व्यक्ति है।

निर्णय लेने की क्षमता व्यक्ति को जितना परिस्थितियाँ सिखाती है उतना कोई और नहीं। परिस्थितियाँ ही व्यक्ति को थपेड़े खिला कर वयस्क कर देती है। और अभाव व्यक्ति को समझ व निर्णय दोनों की शक्ति देता है। निर्णय लेने की क्षमता कमलेश्वर को इन्ही अभावों ने सिखाया। और वे अपने जीवन के हर मोड पर अपना निर्णय करते चले जाते है। पर उनके जीवन में बहुत लंबे समय तक या बहुत दूर तक अभाव, यातना व उपेक्षाएं भी चलती रही। उनके प्रारम्भिक जीवन

में अन्य तरह के भी अभाव चलते रहे, जैसे पढ़ाई को लेकर या कपड़ों को लेकर या अन्य संसाधनों को लेकर हर जगह अभाव ही अभाव दिखता है। किन्तु कमलेश्वर अपने जीवन के अभाव व संघर्ष से कभी घबराते नही है बल्कि वे डटकर कर हर परिस्थिति का सामना करते चलते है। और इन सब जटिल परिस्थितियों से कमलेश्वर के व्यक्तित्व का जो निर्माण होता है, वह एक असाधारण व्यक्तित्व बन जाता है। जो अपने पर आ जाए तो चट्टान की तरह कठोर है और सरलता पर आ जाए तो पानी की तरह सरल है। उनका मनुष्य के प्रति विशेष अनुराग है। अपनो के प्रति स्नेह है। अपने लिए स्वाभिमान है। दूसरों की लड़ाई लड़ने का जज्बा है। सही व गलत को पहचानने की निष्पक्ष दृष्टि है। सही को सही व गलत को गलत कहने का अदम्य साहस है। अपने विचारों पर दृढ़ रहने का संकल्प है। अपने विचारों व लेखन की प्रतिबद्धता से उन्हे कोई समझौता नही है। प्रकृति से उन्हे अगाध प्रेम है। कर्तव्य व ईमानदारी उनके अपने मूल्य है। इन सब मूल्यों के मिश्रण से कमलेश्वर के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। जो निष्कपट व निष्कलुष है।

कमलेश्वर का व्यक्तित्व विविधताओं वाला व्यक्तित्व है। उनके भीतर कई तरह की रचनात्मकता विद्यमान है। यह रचनात्मक वैविध्य आगे चलकर हमें उनके लेखन में भी दिखाई पड़ता है। इसे हम उनका रचनात्मक वैविध्य कहे या उनके व्यक्तित्व का ही वैविध्य कहे पर दोनों एक दूसरे से पूरित है। उनके इस वैविध्यपूर्ण व्यक्तित्व पर कमलेश्वर के अजीज मित्र दुष्यत जी लिखते है कि “वह कितनी तरह से काम करता था, यह पता भी नही चलता था। उन दिनों भी खुद्दार इतना था की अपनी बात किसी से नही करता था। मुझे वे दिन याद हैं जब वह अपने-आप में सर्वोदयी हो गया था (विनोबा से भी पहले)। साबुन बनाने से लेकर अपनी स्याही तक खुद बनाता था। संकोची वह इतना था की खाना भी भरपेट नहीं खा पाता था।”2 खुद्दारी कमलेश्वर के स्वभाव का एक स्थायी भाव है।

कमलेश्वर का जीवन संघर्षमय जटिलताओं से आच्छादित जीवन था। जिसमे संघर्ष, सफलता व निडरता एक साथ चलते है। कमलेश्वर बहुत बड़े घर से नहीं आते है। इसलिए जीवन में संघर्ष भी बहुत है। जैसा की अक्सर साहित्यकार का होता है। उनके व्यक्तिगत जीवन की लड़ाई उससे बड़ी होती है, जो वह सामाजिक या लेखकीय जीवन में लड़ता है। कमलेश्वर की लड़ाई भी अपने जीवन के संघर्षों से बड़ी लड़ाई थी। अमरनाथ जी ने कमलेश्वर के व्यक्तित्व पर टिप्पणी करते हुए लिखते है कि, "कमलेश्वर होने का अर्थ है एक ऐसा व्यक्ति जो जीवन के आरंभिक दिनों में गरीबी और संघर्ष के क्षणों में भी पूरे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ता है। उनका आत्मविश्वास, उनकी निडरता, उनकी आत्मा का खुलापन, उनकी व्यवहार कुशलता, किसी दूसरे के लिए न्यौछावर कर देने की प्रवृत्ति, फक्कड़ और मस्त अंदाज, सिगरेट के धुएं में हर गम को उड़ा देने की प्रवृत्ति, कमलेश्वर को कमलेश्वर बनती है।....कमलेश्वर की सबसे बड़ी खासियत थी की वे यारों के यार थे, चुनौतियों के समक्ष आँधी और तूफान थे...कमलेश्वर जैसा व्यक्तित्व पूरी मानवता के लिए वरदान है और मानवता को समर्पित ऐसा व्यक्तित्व कभी नही मरता।"3 इस तरह कमलेश्वर का व्यक्तित्व एक ऐसा व्यक्तित्व है। जिसमे गरीबी है, संघर्ष है, अभाव है, भोगा हुआ अन्याय है आदि सब कुछ उनमें लिपटे हुए है।

इस तरह से देखे तो इनका प्रारम्भिक जीवन समस्याओं, दुख, दर्द, यातनाओं, उपेक्षाओं व संघर्षों के अंधड़ से भरा जीवन है। जिसमें कमलेश्वर स्वयं अपने मार्ग को चुनते है और उसे अपने अनुकूल बनाते है। और अंत तक एक सफल जीवन जीते है। अनेक क्षेत्र में शून्य से शिखर तक की यात्रा करने वाले कमलेश्वर जी लिखते-पढ़ते हुए, यारों दोस्तों की फिक्र करते हुए, उनके साथ हँसी ठहाके लगाते हुए, उनके सुख-दुख मे शरीक होते हुए, उनसे मिलते-मिलाते हुए, जीवन में तमाम विरोधों को झेलते हुए, अपने चाहने वालों के प्यार को बटोरते हुए, ठिकाने पर ठिकाने

बदलते हुए 27 जनवरी 2007 को साहित्यकाश में चमचमाता हुआ यह सितारा सदा-सदा के लिए अस्त हो गया।

कमलेश्वर के मृत्यु पर उनके संपूर्ण जीवन का आकलन करते हुए साहित्य अमृत पत्रिका के संपादकीय में लिखा कि “कमलेश्वर एक उत्कृष्ट कलाकार थे, एक बेहतरीन इंसान भी थे। वे अचानक चले गए-अपने घर लौटते हुए। एक जीवट पारदर्शी साहित्यकार हमसे छीन गया। साहित्य के क्षेत्र में नेतृत्व देने की क्षमता से सम्पन्न एक उदारचेता रचनाकार थे कमलेश्वर। मनुष्य के व्याख्याता और मनुष्यता को जीने वाले, मित्रता को निभाने वाले, सहृदय सौमनस्य के शिष्ट और सदाशयी उदाहरण थे कमलेश्वर...जिस क्षेत्र को उन्होंने छुआ, उसमें हमेशा प्रथम रहे। चाहे वह पत्रकार के रूप में हो, चाहे कथाकार के रूप में, चाहे उपन्यासकार के रूप में, या फिर स्क्रिप्ट लिखने में, चाहे वाचिक कार्यक्रम हो, चाहे सीरियल हो और चाहे कोई साहित्यिक या सामाजिक कार्यक्रम हो। निश्चय ही दिल्ली में शायद सबसे पसंदीदा, दलमुक्त, साहित्यिक व्यक्तित्व के धनी थे कमलेश्वर। एक सहज साफगोई और बड़प्पन था कमलेश्वर में। उन्होंने सर्जनात्मक, कथात्मक, कल्पनात्मक, बहुत कुछ लिखा और जो कुछ लिखा, उसमें चिंतनशील, संवेदनशील एवं आहत मनुष्यता की पीड़ा बराबर रहती थी। कहीं कोई अन्याय देखते तो हस्तक्षेप करते...दुनिया में कहीं भी अमन का सवाल हो तो सबसे आगे, कहीं अत्याचार-अन्याय दिखाई पड़ता तो हरावल में, सामाजिकता के सजग समर्थक थे...कमलेश्वर की जीवन-यात्रा और उनका रचना संसार बहुआयामी था।”4 कमलेश्वर के जीवन के अन्य पहलुओं का संक्षिप्त विवरण इस तरह है।

शिक्षा:

शिक्षा व संघर्ष मनुष्य जीवन के ऐसे हथियार है जिसके माध्यम से मनुष्य बड़ी से बड़ी कठिनाइयों को पार कर अपने जीवन को नया मुकाम दे सकता है। कमलेश्वर इस बात के प्रत्यक्ष उदाहरण है। कमलेश्वर शुरू से ही पढ़ने में अव्वल दर्जे के छात्र थे। वे पढ़ाई के दौरान अपने कक्षा में पहला स्थान प्राप्त करते रहे। पर उनके साथ अन्याय हो जाता और अन्याय का स्तर इतना होता था कि इनके प्रथम आने की राशि किसी और को दे दी जाती थी। और कमलेश्वर चुपचाप इस अन्याय को देखते व सहन कर जाते थे। इस अन्याय का प्रतिकार भी नही कर पाते थे। इस अन्याय से कमलेश्वर को अत्यंत क्षोभ होता था। पर वे कुछ कर नहीं पाते थे। अपने आप में खीझ कर रह जाते थे। पर इनके मन में क्षोभ पलाता रहा। और क्षोभ का कारण इसलिए और अधिक मजबूत हो जाता था कि परिवार आर्थिक तंगी से गुजर रहा था। और सम्मान की राशि से ये अपने फीस की व्यवस्था की बात सोचते थे। किन्तु वह किसी और को दे दी जाती। यह बात कमलेश्वर के लिए वैसे ही थी जैसे किसी भूखे व्यक्ति के मुह तक आए हुए निवाले को छीनना हो। और छीने हुए निवाले को किसी खाएं अघाए व्यक्ति को दे देना हो। इस पीड़ा को वही समझ सकता है जो भूख को बड़ी शिद्दत से महसूस किया हो। इस बात का जिक्र कमलेश्वर करते हुए लिखते है कि, “स्कूल में मेरे इनाम दूसरों को दे दिए जाते थे और फीस के लिए मुझे बहुत बेइज्जत किया जाता था।”5 इस तरह का अन्याय, शोषण व व्यवस्था कमलेश्वर अपने बचपन से ही देखते है। जिसका प्रभाव बालक कमलेश्वर के हृदय में स्थायी रूप से बैठ जाता है। और कमलेश्वर इस तरह के अन्याय, शोषण व व्यवस्था का जीवन भर विरोध करते है। स्कूल की इस व्यवस्था को देख कर बालक कमलेश्वर का मन निराशा से भर जाता था। और स्कूल जाने की उनकी इच्छा जैसे मरती जा रही थी। और उन्हे स्कूल जाने में कोई उत्साह नही रह गया था। इसका कारण यह था कि

इस तरह का अन्याय व अभाव उन्हे बहुत तोड़ देते थे। वे स्वयं कहते है कि, "गर्मी की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुलता था तो वहाँ जाने का कोई उत्साह मन में नही होता था। पुरानी किताबें, वह भी पूरी नही। कापियाँ खरीदने के पैसे नही होते थे, इसलिए भाई साहब के आने के इंतजार रहता था की वह आएंगे तो सरकारी कागज के दस्ते-दो-दस्ते लाएंगे और तब मेरी बेनाप की कापियाँ बनेंगी।"6 फीस की व्यवस्था स्कूल वाले छीन लेते थे और कापियों की व्यवस्था भाई के आने पर सरकारी कागज के दस्ते से की जाती थी और बस्ता माँ अपनी पुरानी साड़ियों में से कर देती थी। जैसाकि उन्होंने कहा है की, "माँ अपनी फटी धोतियों की किनरियाँ लपेट-लपेटकर रखती थी और स्कूल खुलते ही मेरे लिए उन किनारियों का नया बस्ता सी देती थीं।"7 यह उनकी आरंभिक शिक्षा का चरण है। इस तरह से वे प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर दसवीं तक की पढ़ाई मैनपुरी से प्राप्त की। दसवीं वे राजकीय हाईस्कूल मैनपुरी से 1948 ई. में पास हुए। तथा आगे की पढ़ाई के लिए वे इलाहाबाद आ जाते है। और के. पी. इंटर कालेज से 1950 ई. में इंटरमीडिएट उत्तीर्ण हुए। स्नातक व परास्नातक की डिग्री इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज से प्राप्त की। परास्नातक इन्होंने हिन्दी से 1954 ई. में किया था। कमलेश्वर का हिन्दी से परास्नातक होना सौभाग्य या दुर्भाग्य की बात थी। पर सिद्ध यह सौभाग्य की बात हुई। इसका कारण यह था कि कमलेश्वर हिन्दी नही पढ़ना चाहते थे किन्तु हिन्दी इन्हे चाहती थी। और इन्हे अपने तरफ खिच लाई और जो एक बार वे हिन्दी की तरफ आए तो आजीवन उसी हिन्दी के बनकर रह गए। सौभाग्य या दुर्भाग्य की बात इसलिए की कमलेश्वर जी स्वयं लिखते है कि, "सन 1952 में मैं एम. ए. हिन्दी में दाखिला ले चुका था क्योंकि मुझे देरी होने के कारण किसी और विषय में दाखिला नही मिला था। अपना एक वर्ष बचाने के लिए मैंने हिन्दी में दाखिला ले लिया था और जो दाखिला लिया तो फिर मैं हिन्दी का ही बनकर रह गया।"8 इस तरह वे अपनी उच्च शिक्षा प्रयागराज से प्राप्त की।

परास्नातक के बाद कमलेश्वर पीएच. डी. भी करना चाहते थे। और इन्होंने उसमे दाखिला भी लिया किन्तु जीविका के संघर्षों के चलते वे इसे पूर्ण न कर सके और उसे बीच में ही अधूरा छोड़ देते है। यह उनके शिक्षा का सम्पूर्ण व अपूर्ण सफर है। यह कमलेश्वर का अकादमिक शिक्षा थी। कमलेश्वर अकादमिक जगत से अधिक जीवन की पाठशाला से सीखते है। पढ़ने का नाम सिर्फ डिग्री लेना नहीं है। कई बार बहुत पढे लिखे लोग भी पशुवत व्यवहार करते है और कई बार एकदम अनपढ़ व्यक्ति भी बहुत उच्च स्तर का सम्मान करता है। तो पढ़ने का नाम सिर्फ डिग्री नहीं है। मानवीय गुणों को मनुष्यता को अपने भीतर बचाकर रखना भी एक बड़ी शिक्षा हैं जो कमलेश्वर में कूट-कूट कर है। यही उनके लेखन का आधार बनती है।

प्रयागराज में रहते हुए व विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए दिनों में कमलेश्वर की यारियाँ बड़ी प्रसिद्ध थी। और हो भी क्यों न उस यारी में एक से बढ़कर एक नायाब हीरे थे। जिसमे कमलेश्वर, दुष्यत व मार्कण्डेय की तिकड़ी खासी चर्चित थी। तीनों का एक दूसरे के प्रति अगाध स्नेह था। तीनों विश्वविद्यालय में साथ में पढ़ते थे। साथ में आते-जाते थे। और मस्ती मजाक चलता रहता था। कमलेश्वर के जीवन में तिकड़ी काफी महत्त्वपूर्ण है। इलाहाबाद की कमलेश्वर, दुष्यत व मार्कण्डेय की तिकड़ी के बाद दिल्ली की राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश व कमलेश्वर की तिकड़ी भी खूब प्रसिद्धि अर्जित की। यह कमलेश्वर का अकादमिक सफर था।

विवाह:

कमलेश्वर का विवाह सन 1958 ई. में शांता वर्मा के साथ से हुआ था। शांता वर्मा का नाम शादी के बाद गायत्री देवी हो जाता है। गायत्री देवी एक लेखिका भी थी। और वह बहुत ही सरल व मृदु स्वभाव वाली महिला भी। वैवाहिक जीवन कमलेश्वर का अत्यंत प्रगाढ़ प्रेमपूर्ण था। गायत्री जी हर हाल में इनका साथ निभाती थी। इनकी हर छोटी-बड़ी बातों का ध्यान रखा करती थी। कमलेश्वर

अपनी सफलता का श्रेय गायत्री जी को देते रहे। और कहते रहे की इस सफलता मे या इतना सब कुछ कर पाने में गायत्री के सहयोग से ही संभव हो पाया है। इनको एक संतान थी जिनका नाम इन्होंने मानू रखा है। कमलेश्वर बेटी मानू को बेहद प्यार करते थे। और मानू की शादी कमलेश्वर अपने दोस्त दुष्यत के पुत्र आलोक जी के साथ की है। कमलेश्वर के जीवन में एक सवाल बार-बार उझलता रहा और वह सवाल था उनकी ऐय्याशियों को लेकर। इस सबको को लेकर मन्नू भण्डारी में 2014 में एक लेख 'कितने कमलेश्वर' नाम से लिखा था। इस लेख मे मन्नू जी ने कमलेश्वर का कई स्त्रियों के साथ संबंधों का जिक्र किया है। और इसी लेख से यह भी पता चलता है कि गायत्री के अलावा दो अलग-अलग स्त्रियों से इनको दो संताने और थी।

पारिवारिक परिस्थितियाँ:

कमलेश्वर का परिवार पारंपरिक तौर पर एक रईस परिवार था। जिसमें आर्थिक संपन्नता व सामाजिक हैसियत अच्छी थी, किन्तु बाद के दिनों में परिवार आर्थिक रूप से बहुत विपन्न हो चुका था। जिसका प्रमुख कारण पिता व बड़े भाई की असमय मृत्यु थी। क्यों कि उनकी मृत्यु के बाद घर को संभालने वाला कोई नही रह गया था। इसके साथ दूसरा कारण यह भी था कि आजादी के बाद सामंती जागीरदारी खत्म होती है। चूंकि कमलेश्वर का घर पुरानी जागीरदारी का घर था। तो इनके समय में यह एक उजड़ी हुई जागीरदारी का घर था। जिस बात की पुष्टि स्वयं कमलेश्वर जी करते हुए कहते है कि, "वह दूसरे महायुद्ध का जमाना था। जागीरदारी का वातावरण खत्म हो रहा था। नौकर चाकर चले गये थे, गाय भैस को जिंदा रखने के लिए गाँव में भेज दिया था, लेकिन हम लोगों के जीवित रहने की कोई सूरत नजर नही आती थीं। माँ रात को ढ़ाई तीन बजे उठकर हाथ में कपड़ा लपेट-लपेटकर कुट्टी काटती, चक्की चलती बर्तन धोती और सुबह होते-होते नहा धोकर पुराने जमींदार घराने की इज्जतदार मालकिन हो जाती। मोहल्लों वालों के घावों पर

मरहम लगाती और रात को चुपचाप रोया करती।"9 कमलेश्वर के इस कथन से स्पष्ट है कि कमलेश्वर के समय परिवार एक उजाड़ हुआ जमीदार परिवार था। जो उजड़ने के साथ अपने साख को बचाएं रखने के लिए भी संघर्षरत था।

परिवार आर्थिक रूप से काफी तंग चलता था। जिसके कारण परिवार मे नई चीजों का प्रायः अभाव रहता था या नई चीजें बहुत कम आती थी। ऐसी स्थिति में घर की पुरानी से पुरानी चीज की नए रूप में उपयोगिता पर ध्यान सबसे पहले जाता था। सामान्य परिवारों मे यह बात अब भी दिख जाती है। यह कोई बहुत आश्चर्य की बात नहीं है। इस बात का जिक्र कमलेश्वर स्वयं करते है, "होली, दिवाली पर माँ अपनी कोई बड़ी संभालकर रखी सिल्क की पुरानी साड़ी निकाल लाती और घंटों एक-एक कतरन का अंदाज लगती- "अगर आस्तीन छोटी कर दू तो दो कुर्ते बन जाएगा एक तेरा, मुन्ना का, मुन्नी की फ्राक का घेर भी निकल आएगा।"10 यह कमलेश्वर के जीवन में नितांत अभाव के दिन थे। इस तरह के दिन जीवन के सबसे बड़े दुर्दिन के दिन होते है। सबसे अधिक अभाव व संघर्ष के दिन होते है।

जीवन में अभाव कितना व किस कदर था। घर कैसे व किन परिस्थितियों में चलता था। बाजार और बाजार की नयी वस्तुएं इनके लिए क्या व कितना महत्त्व रखती थी। यह बात कमलेश्वर के इन बातों से स्पष्ट है, "और वर्तमान से जूझते हुए बड़े भाई जब साल-भर बाद घर आते थे तो हमें पता चलता था कि बाजारों में बहुत-बहुत-सी चीजें बिकती हैं...कुछ वह हमारे लिए लाते थे जिन्हे कल के लिए बक्सों में रख दिया जाता था। और घर से नौकरी पर वापस जाकर वहाँ बड़े भाई अपना दूध और अखबार बंद कर दिया करते थे...आखिर खर्चा कहाँ से आएगा ?"11 इस कदर का आर्थिक अभाव, इस तरह की आर्थिक मार सहकार व्यक्ति कभी किसी को आर्थिक

बदहाली में नहीं देख सकता न डाल सकता है। कमलेश्वर इस तरह की आर्थिक बदहलियों का जिक्र लगातार अपने लेखन में करते रहे है।

कहते है की समस्याएं जब आती है तो हर तरफ से आती है। कमलेश्वर के साथ भी शायद यही हो रहा था। खाने, पहनने, पढ़ने से लेकर रहने तक की स्थितियाँ अपने बस की नही रह गयी थी। सब कुछ जैसे किसी और के अधीन चल रहा हो। और जैसा वह चाहता है वैसा वे करते चल रहे है "परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी गड़बड़ा चुकी थी कि घर की छत तक अनिश्चय में थी। वह न जाने कब गिर सकती थी, साथ ही अपने साथ न जाने कितनों को ले जाने की स्थिति में आ गयी थी। इतना होते हुए भी कमलेश्वर की माँ पास-पड़ोस की हर संभव सहायता को तत्पर रहती थी। आंतरिक और बाहरी दोनों विवशताओं को ढोंते-ढोंते अब तो उनकी अश्रुधार भी सूख गयी थी। उनकी आखों में आँसू नही आते थे, वे सूखी आँखों से दीवारें ताकती रहतीं और दिल के दौर पड़ने शुरू हो गए थे।"12

मैनपुरी से लेकर प्रयागराज तक का सफर कमलेश्वर का आर्थिक तंगी का समय है। और तब तक पारिवारिक परिस्थितियाँ कमलेश्वर को आर्थिक रूप से परेशान करती ही रहती थी। पर पहले-पहल जब वे दिल्ली दूरदर्शन की सरकारी नौकरी में नियुक्त होते है। तब परिवार आर्थिक तंगी से निजात पाता है। लेकिन दुर्भाग्य से यह नौकरी ज्यादा दिन तक चल नहीं पाती है। यानि कमलेश्वर के हाथ से नौकरी चली जाती है। और इसके साथ ही एक बार फिर से उनकी आर्थिक स्थिति खराब होती है। इन खस्ता हालातों में कमलेश्वर कभी-कभी कुछ शरारत भी कर जाते थे। ऐसे ही हालातों से जुड़ी एक शरारत का जिक्र करते हुए मन्नू जी ने लिखा है कि एक बार कमलेश्वर एक ही उपन्यास के शीर्षक मे परिवर्तन करके दो अलग-अलग प्रकाशकों को देकर उनसे रायल्टी ले लेते है। बाद में उपन्यासों के प्रकाशन के बाद इस पर बड़ा हंगामा होता है। पर इन सबके बीच वे

लगातार आर्थिक तंगी से लड़ते रहते है। किन्तु जब वे दिल्ली से मुंबई सारिका के संपादक बनकर आते है तो जैसे इनके जीवन में आर्थिक सूर्योदय होता है। नाम, मान-सम्मान व धन-दौलत सब कुछ कमलेश्वर यहाँ से बहुत कमाते है। सारिका के सम्पादन के साथ वे फिल्मों में लेखन का काम भी करते है। और साथ ही दूरदर्शन पर कार्यक्रम की प्रस्तुति भी देते है। काम भी अच्छा मिला और उसका दाम भी अच्छा मिला। जिसके परिणाम स्वरूप कमलेश्वर आर्थिक सपन्नता की दृष्टि से अपने जीवन के शिखर पर पहुच जाते है। पर कमलेश्वर अपने जीवन में पैसों के पीछे कभी नहीं भागें वरना जिस कदर की उनमें प्रतिभा थी वे अपार संपत्ति अर्जित कर सकते है। सरकारी सुविधा का भोग, भोग सकते थे। पर कमलेश्वर ने जो भी कमाया जो भी अर्जित किया अपने ईमान से किया अपने को बेचकर नहीं किया। जन सामान्य की हालातों को बेचकर उनका सौदा करके नहीं किया। बल्कि उनके साथ मिलकर कमाया और जिया।

राजनीतिक सक्रियता:

कमलेश्वर का जिस परिवेश मे जन्म होता है। जिस परिवेश मे वे पलते-बढ़ते है। वह समय भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन का समय है। उस समय का स्वतंत्रता संग्राम का आंदोलन चारों तरह से अपने चरम पर था। कमलेश्वर इससे प्रभावित होते है और स्वतंत्रता आंदोलन में प्रतिभाग के लिए तैयारियां भी करते है। पर घर की जिम्मेवारियों के चलते वे कभी मुखर हो कर इसमें भाग नही ले पाते है बल्कि अवसरानुकूल चोरी छिपे स्वतंत्रता आंदोलन में काम करते है। जब तक वे मैनपुरी में थे तब तक ऐसे ही चलता रहा पर जब वे इलाहाबाद में आते है तो पार्टी बद्ध हो जाते है। जिसका उल्लेख वे कहते है कि, "इलाहाबाद आकर मैं क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी का थोड़ा-बहुत काम करने लगता हूँ। साथ में पढ़ाई जारी है। तमाम किताबें और पर्चे हर रोज मिलते है जिनमें....हिंदुस्तान का एक नया नक्शा है...हिंदुस्तान के बाहर विदेशों में चल रही अवाम की लड़ाई

की खबरे हैं...उन अफ्रीकी और परतंत्र देशों की खबरे हैं, जहां जनता अपनी खोई हुई आजादी के लिए लड़ रही हैं।"13 यह लेखन यह विचार कमलेश्वर को एक लड़ाई का क्षेत्र देता है। और क्षेत्र है आम आवाम की आवाज बनाना। जिनकी अजावें दबा दी गई है या दब गई है उन आवाजों को सुर देना, अपनी लड़ाई को पहचानना, कमलेश्वर यही से सीखते है। और इसे आगे बढ़ते है।

जैसे-जैसे पार्टी में उनकी सक्रियता बढ़ती है वे और अधिक जिम्मेवारियां वहन करते चलते है। अब वे क्रांतिकारियों की जीवनियाँ लिखना शुरू कर दिए थे। अभाव तो जीवन में था की किन्तु कमलेश्वर के विचार बड़े की क्रान्तिकारी है। वे आर्थिक विपन्नता को अभी अपने विचारों में आड़े नही आने देते है, वे कहते है कि, "जनक्रान्ति अखबार निकलता है और मैं उसमें क्रांतिकारीयों की जीवनियां लिखना शुरू करता हूँ! वहीं पार्टी के दफ्तर में बैठ-बैठकर तमाम किताबें पढ़ता हूँ और अपनी असली लड़ाई को पहचानता हूँ। जिंदगी में सब कुछ है, सिर्फ पैसे नही हैं। पर अब पैसों की कमी उतनी नही खलती। इस जिंदगी में यह दिक्कतें उठानी ही पड़ती है। हममें से किसी के पास पैसा नही है, कपड़ा नही है, जूते नही है, बिस्तर नही है, प्रस्ताव है, वक्तव्य है, आंदोलन हैं। इसलिए सब-कुछ हैं।"14 कमलेश्वर के यह विचार क्रांतिकारियों के विचार से प्रभावित विचार है। यह क्रांतिकारियों की जीवनियां लिखते हुए के उनके विचार है। लेकिन यह प्रस्ताव, वक्तव्य व आंदोलन उनके जीवन के धुरी बन जाते है। उनके जीवन के वलय वृत बन जाते है। उनके लेखन का जीव द्रव्य बन जाता है। जिसे वे सदैव जीवित रखते है।

इन राजनीतिक गतिविधियों के चलते कमलेश्वर जी अपने जीवन में उन्नीस दिन की नाबालिग जेल की यात्रा की कर चुके थे। जो इनकी पहली व अंतिम जेल यात्रा थी। वह भी नाबालिक। और जिस मामले मे यह पकड़े गए थे उस मामले में इनकी बहुत सक्रियता नहीं थी लेकिन पार्टी दफ्तर में पकड़े जाने के कारण इनको जेल जाना पड़ा। कमलेश्वर लिखते है "किसान आंदोलन चल रहा

था। पुलिस ने आफिस पर छापा मारा। दो साथियों के साथ मैं पकड़ा गया।...नैनी जेल में उन्नीस दिन बंद रहा। उम्र से नाबालिग होने के कारण चुपचाप मुझे छोड़ दिया गया।"15 एक साहित्यकार का सबसे बड़ा प्राप्य यही होता है कि उसके वाणी व कर्म में द्वैध न हो। वाणी व कर्म की एकता ही साहित्यकार को साहित्यकार व साधक बनती है। वरना साहित्य गल्प बनकर रह जाता है। कमलेश्वर की जेल यात्रा व समय-समय पर नौकरियों का छोड़ते रहना उनके वाणी व कर्म की एकता के कारण ही यह होता रहा।

बाद में पार्टी और नेताओं के विचार, गतिविधियों व उनके व्यवहार से कमलेश्वर बहुत आहात होते हैं और राजनीतिक गतिविधियों से अपने आप को दूर कर लेते हैं। और फिर कभी राजनीति की तरफ नहीं मुड़े। राजनीति की समझ कमलेश्वर में गजब की है जिसका सबूत राजनीति पर लिखे गए उनके उपन्यास व कहानियाँ है।

नाम/उपनाम

कमलेश्वर के नाम को लेकर के कहीं-कहीं भ्रम की स्थिति है। कमलेश्वर तो उनका साहित्यिक नाम है जिससे ये जाने और पहचाने गए। इस नाम में कहीं कोई भ्रम नही है। किन्तु इनके मूल नाम को लेकर कहीं-कहीं दो नाम मिलते है- जिसमे कुछ लोग कैलाश प्रसाद सक्सेना बताते है, तो कुछ लोग नीरज प्रसाद सक्सेना। किन्तु इनका मूल नाम कैलाश प्रसाद सक्सेना है। जिसका जिक्र इनकी माँ दुष्यत से अपने बातों के दौरान किया करती थी। दुष्यत जी लिखते है कि, "उसकी माँ ने एक बार बताया था- कैलाश (यही उसका घर का नाम है) इतना संकोच करता है कि दुबारा रोटी तक नही माँगता।"16 कभी-कभी साहित्यकारों के द्वारा गुप्त नाम या उपनाम का भी प्रयोग किया जाता है। इस गुप्त नाम या उपनाम का प्रयोग साहित्यकारों के द्वारा अलग-अलग कारणों से किया जाता रहा है। कमलेश्वर भी अलग-अलग समय में अलग-अलग विषयों को अलग-अलग

नामों से लिखते व छपते रहे। जैसे पर्यवेक्षक, संजय, हरिश्चंद्र, सौमित्र, विप्रगोस्वामी, इत्यादि कमलेश्वर के उपनाम है। कमलेश्वर ने कौन सा नाम कब और किस लिए प्रयोग किया इस पर महत्त्वपूर्ण टिप्पणी है कि, "फासिस्ट विरोधी लेख संजय उपनाम के अंतर्गत उन्ही के लेख हुआ करते है। संप्रदायवाद, अंध-राष्ट्रीयतावाद और हिंदुवाद की बखिया कमलेश्वर ही हरिश्चंद्र उपनाम से उधेड़ते रहे थे। पूँजीवाद अर्थव्यवस्था, युद्‌ध उन्माद और भारतीय बुर्जुवा वर्ग की साजिशों को कमलेश्वर ही सौमित्र सिन्हा के नाम से बेनकब करते रहे थे।...प्रतिक्रियावादी, सेक्सवादी, स्वच्छंदतवादी प्रवृत्तियों के विद्रोही बनकर कमलेश्वर ने ही विप्र गोस्वामी बनकर लेख लिखे है।"17 पर्यवेक्षक के नाम से इगित पत्रिका में तीसरी दुनिया के देशों के आर्थिक समायोजन पर टिप्पणियाँ लिखते थे। यह कमलेश्वर के उपनाम है।

जीवन पड़ाव:

कमलेश्वर के जीवन पड़ाव को देखे तो उनका जीवन एक यायावरी का जीवन जैसा दिखाई पड़ता है। मैनपुरी के कस्बे से जो जीवन की यात्रा कमलेश्वर शुरू करते है वह कस्बे, नगर से होते हुए महानगर तक विस्तृत है। मैनपुरी से शुरू यात्रा उन्हे कहीं स्थिर नही होने देती हैं, वह निरंतर उन्हे चलाए रखती है। उनका जीवन एक तरह से यात्राओं का जीवन है। वे मैनपुरी से इलाहाबाद, इलाहाबाद से दिल्ली, दिल्ली से मुंबई और फिर मुंबई से दिल्ली मे रचते व बसते रहे। इस तरह देखे तो उनके जीवन में कहीं ठहराव नजर नही आता है। उसमें एक गतिशीलता बनी हुई है। एक निरन्तरता बनी हुई है। एक शहर से दूसरे शहर की निरन्तरता है। एक शहर से दूसरे शहर की छाप है। इसी तरह गतिशील उनका जीवन भी रहा है कि उसमें कहीं ठहराव नही हैं, बल्कि एक पड़ाव के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा ऐसे ही चलता रहा है। यह उनके गतिशीलता का भी प्रमाण है। यह गतिशीलता कमलेश्वर के साहित्य में भी दिखाई पड़ती है। जैसे उनके जीवन के

पड़ाव है वैसे ही पड़ाव उनके साहित्य का भी है। वह कस्बा से लेकर महानगर तक विस्तृत फैला हुआ है। वह कई विधाओं में व्याप्त है।

साहित्यिक जीवन परिचय:

किसी भी लेखक या कलाकार कि सफलता का कारण उसका अपने विषय की दक्षता के साथ उसका सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक दृष्टि आदि के समझ पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। और साहित्य मे सामाजिक मूल्यों के साथ साहित्यिक मूल्यों की प्रतिबद्धता किसी लेखक को अत्यधिक उचाइयाँ प्रदान करने में मदद करती है। कमलेश्वर अपने विचारों के प्रति प्रतिबद्ध व प्रामाणिक लेखक है। अपने विचारों से वे कभी कोई सुलह समझौता नही करते है। वे लेखन में लेखक को विचारों के साथ प्रतिबद्ध होना ही वे लेखन की कसौटी मानते है। विचारों की फिसलन व लेखकीय विचारों से समझौता वे लेखक व विचार दोनों की मृत्यु मानते है। और बिना वैचारिक प्रीतिबद्धता के लेखन को वे लाभ पूर्ण लेखन मानते है। समाज से समस्याओं से असंबद्ध लेखन को वे निरर्थक लेखन मानते है। मूल्य रहित लेखन को वे लेखन नही मानते है, यही कारण है की वे कई बार अपने समकालीन लेखकों के लेखन का विरोध भी करते है और उसे वे वास्तविक लेखन नही मानते है। उसे वे अवास्तविक लेखन कहते है या लाभपूर्ण लेखन मानते है। पर वे अपने आपको साहित्य के प्रति जिम्मेदार मानते हुए प्रतिबद्ध बने रहते है। अपने लेखकीय दायित्वों के प्रति सतर्क व सावधान है।

असहमति या प्रतिवाद का मूल्य बुद्धिजीवियों को समय-समय पर चुकाना पड़ता रहता है। और यह कोई नई बात नहीं है यह सदियों से होता आया है। और यह हर जगह है क्या यूरोप और क्या एशिया। इस मामले में दोनों सम है। कमलेश्वर भी अपने विचारों के चलते अच्छी खासी दूरदर्शन की नौकरी से हाथ धो लेते है। इस तरह कमलेश्वर अपनी प्रतिबद्धता, वैचारिक असहमतियों,

प्रतिवादों का मूल्य चुकाते रहे। साहित्यिक वैचारिकी के कारण कमलेश्वर नौकारियां पकड़ते व छोड़ते रहे पर कभी अपनी प्रतिबद्धता, अपनी वैचारिकी से कोई समझौता नही किया। डॉ. बन्दना अग्निहोत्री लिखती है कि, “कमलेश्वर के लेखन पर काल-प्रभाव पूर्णतः दिखाई देता है। स्वतंत्रता के पश्चात सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, बदलाव अप्रत्याशित घटनाक्रम की तरह साबित हो रहे थे। कई स्थानों पर स्वतंत्रता प्राप्ति के स्वप्न से मोहभंग हुआ तो कहीं विभिन्न चुनौतियों से निपटने की तैयारी करनी पड़ी। ऐसी परिस्थिति में विकास की, आधुनिकता की, अस्मिता की दुहाई दी जाने लगी। इन सब में कमलेश्वर का लेखन, विषयानुरूप कठोरता और मानवीय कोमलता के लिए पुष्ट होता गया। वर्ग-विडंबनाओं पर भी कमलेश्वर अपना लेखन सटीकता से कर सके।”18 किसी साहित्यकार का साहित्यिक परिचय उसके साहित्यिक अवदानों से निर्मित होता है। कमलेश्वर हिन्दी साहित्य के एक ऐसे लेखक है जिनका साहित्यिक फलक अत्यंत विस्तृत है। कहानीकार, उपन्यासकार, संपादक, पटकथा लेखक, अनुवादक, इत्यादि कई रूपों में बेजोड़ साबित होते है। उनके अन्य रूप इस तरह है।

पटकथा व संवाद लेखक:

हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों के लिए फिल्म व टेलीविजन की आभासी दुनियाँ बहुत उपयुक्त नहीं रही। या यू कहें की हिन्दी साहित्य की दुनिया से फिल्म जगत में पदार्पण करने वाले साहित्यकारों के पक्ष में सफलता कम असफलता ज्यादा ही मजबूत रहीं है। साहित्यजगत से फिल्म में हाथ आजमाने वालों साहित्यकारों में मुख्यतः मुंशी प्रेमचंद, अमृतलाल नागर, भगवती चरण वर्मा, सुदर्शन, उपेन्द्र नाथ ‘अश्क’, गोपाल सिंह ‘नेपाली’, नरेंद्र शर्मा, मनोहर श्याम जोशी, राजेश जोशी, गोपालदास ‘नीरज’, राही मासूम रजा तथा कमलेश्वर इत्यादि कुछ प्रमुख नाम है। इनमें से कुछ लोग इस चमचमाती दुनिया में सफल होते है तो कुछ असफल होते है और कुछ लोग के

अनुकूल यह संसार नहीं लगा तो वे यहाँ से निकल जाते है। किन्तु कमलेश्वर इस आभासी दुनियाँ में अपार सफलता अर्जित की। और कमलेश्वर की सफलता का राज यह रहा कि कमलेश्वर इस दुनियां के हिसाब से नहीं बल्कि इस दुनियाँ में अपने विचार लाए उसे अपने हिसाब से प्रस्तुत किया उसे अपने अनुरूप चलाया। यह इनकी सफलता का राज है। वे जीतने सफल साहित्यकार है उतने ही सफल वे पथकथा व संवाद लेखक भी है। उन्होंने लगभग 99 फिल्मों में पटकथा व संवाद लेखन का कार्य किया है। उनके द्वारा लिखित कुछ प्रमुख फिल्मे इस प्रकार है जिसमें उन्होंने पटकथा व संवाद लेखन का कार्य किया है जैसे- आँधी, मौसम, राम बलराम, अमानुष, घड़ी के दो हाथ, पति पत्नी और वह, आनंद आश्रम, वही बात, मृगतृष्णा, सौतन की बेटी, दी बर्निंग ट्रेन, छोटी सी बात, मिस्टर नटवरलाल, रजनीगंधा, तुम्हारी कसम, साजन बिना सुहागन, साजन की सहेली, बरसात की एक रात, रंग-बिरंगी, यह देश, बाजी, लैला, खलनायिका इत्यादि प्रमुख फिल्में है।

दूरदर्शन व प्रस्तुतीकरण:

दूरदर्शन व प्रस्तुतीकरण का कार्य कमलेश्वर इलाहाबाद से ही शुरू कर दिए थे। प्रारंभ में वे इलाहाबाद के रेडियों में स्टाफ आर्टिस्ट का काम करते थे। और कुछ ही समय बाद 1958 ई. में उनका स्थानान्तरण दिल्ली के दूरदर्शन विभाग में कर कर दिया जाता है। यह कमलेश्वर की प्रथम सरकारी नौकरी भी थी। यहाँ कमलेश्वर दूरदर्शन के कार्यक्रमों का लेखन व प्रस्तुतीकरण दोनों का कार्य करते थे। कमलेश्वर अब तक दिल्ली में व्यवस्थित रूप से स्थायी हो चुके थे। किन्तु इसी बीच में इनका उपन्यास काली आँधी प्रकाशित होता है। जिस पर झूठे आरोप यह लगता है कि यह इंदिरा गाँधी जी के राजनीतिक जीवन उनकी राजनीतिक सफलता उनके दाव पेच पर आधारित है। जबकि यह सच नहीं बल्कि यह झूठ है। लेकिन झूठ भी सरकार के कानों तक सच की तरह

पहुंचता है और इसके चलते कमलेश्वर को अपनी सरकारी नौकरी छोड़नी पड़ी। इस तरह काली आंधी उपन्यास किसी के जीवन के काली आंधी को चित्रित करता हो या न करता हो किन्तु कमलेश्वर के जीवन में इसके चलते काली आंधी जरूर आती है। और उन्हे अपनी सरकारी नौकरी छोड़नी पड़ती है। इसके बाद कमलेश्वर कुछ दिनों तक दिल्ली में ही अलग-अलग जगह लेखन व संपादन का कार्य करते रहे किन्तु वे अपने आप को व्यवस्थित नहीं कर पा रहे थे। यह दिल्ली में कमलेश्वर के बहुत ही संघर्ष के दिन थे। किन्तु कुछ ही समय बाद कमलेश्वर को टाइम्स ऑफ इंडिया समूह की पत्रिका सारिका के संपादन का निमंत्रण मिलता है। और वे दिल्ली से मुंबई आ जाते है। यहाँ से कमलेश्वर संपादन के साथ-साथ फिल्म जगत में प्रवेश करते है। और अपार सफलता व लोकप्रियता अर्जित की। यह कमलेश्वर के जीवन के सबसे सुनहले दिन थे। जिसके चलते उन्हे सन 1980 ई. में पुनः उन्हे दूरदर्शन के अतरिक्त महानिदेशक के पद पर नियुक्ति मिलती है। और वे 1980 से 1982 तक इस पद पर रहे। यह एक कलाकार के रूप मे कमलेश्वर की बड़ी उपलब्धि थी। कमलेश्वर हमेशा अपने काम पर ध्यान देते है। वे पैसे या पद के पीछे नहीं भागते किन्तु अपने काम के प्रति उनकी ईमानदारी ही उन्हे सफल बनती रही। इसी से वे नई-नई उपलब्धियां हासिल करते है। नई-नई कीर्तियां स्थापित किए।

प्रस्तुतियों में कमलेश्वर टेलीविजन पर जनसामान्य के जीवन पर आधारित परिक्रमा कार्यक्रम की प्रस्तुत देते थे। जो अपने समय का सबसे लोकप्रिय कार्यक्रम हुआ करता था। इसकी लोकप्रियता इतनी थी कि यूनेस्को ने इसे दुनिया के दस सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रमों में जगह दी है। परिक्रमा में वे समाज के निचले से निचले व्यक्ति की जीवनी को प्रस्तुत करते थे। जैसे साधारण जगहों पर बाल काटने वाले, मकान बनाने वाले मजदूर, झोंपड़पट्टी में रहने वाले, टैक्सी वाले, कचरा जमा करने वाले, सड़क पर गाने वाले व गटर को साफ करने वाले ऐसे सामान्य जीवन को बड़े पर्दे पर प्रस्तुत

करने वाले कमलेश्वर थे। इसके लिए कमलेश्वर को लोगों से खूब प्यार मिला। स्नेह मिला। पर कुछ खाये पिये अघाये लोगों को यह लोकप्रियता हजम नही हो रही थी। इसके लिए कमलेश्वर को उनकी आलोचना भी सुनने को मिलती था। इस लोकप्रियता की आलोचना का एक नमूना यह है। जो प्रसिद्ध सिने अभिनेता आई. एस. जौहरी कि है, “जो लोग चार हजार रुपये खर्च करके टी. वी. खरीदते है, वे हज्जामों व कुलियों के कार्यक्रम नही देखना चाहते। कमलेश्वर के प्रोग्राम बकवास है।”19 जौहरी जी के अनुसार टीवी व उसके कार्यक्रम कुछ गिने चुने लोगों के लिए मानसिक विलासिता के साधन मात्र होने चाहिए। उसमें सामान्य मनुष्यों के जीवन को दिखाना जैसे जघन्य अपराध हो उनकी दृष्टि से। पर कमलेश्वर वही कर रहे है। इस कथन से फिल्म जगत की सामंती सोच भी उजागर हो रही है, उसकी मानसिकता की परते भी खुलती है। इस बेतुके विचार का जवाब कमलेश्वर जी ने यह कह कहते हुए दिया कि, “जो लोग अपनी आँखों पर चार हजार का चश्मा लगाएं बैठे है, उन्हे जो दिखाई नही देता, वही मैं अपने कार्यक्रमों में पेश करता हूँ।”20

परिक्रमा के संबंध में प्रसिद्ध अंग्रेजी विचारक निसीम इजीकेल का मत है कि, “कमलेश्वर के कार्यक्रम (परिक्रमा) भारतीय टेलीविजन की उपलब्धि हैं। अलग-अलग कार्यक्रम से उन्होंने दूरदर्शन को लोकप्रिय बना दिया।”21 इसके अतरिक्त कमलेश्वर ने दूरदर्शन से लोकमंच, आकाशगंगा, रेत पर लिखे नाम, बिखरे पन्ने, विराट, बेताल पचीसी, युग तथा दूरदर्शन क्लब जैसे कार्यक्रम की भी प्रस्तुति दी।

इस तरह नयी कहानी के समान इन्होंने सिनेमा में समानान्तर सिनेमा का सूत्रपात भी किया। यहाँ भी कमलेश्वर अपने विचारों के प्रति प्रतिबद्ध रहते है और समाज के सच को सामने रखते रहते है। कमलेश्वर की एक खास विशेषता यह है कि जहां कहीं भी उन्हे अपने विचारों के साथ समझौते की बात आयी है वहाँ-वहाँ कमलेश्वर व्यक्ति, संस्थान व नौकरियों से समझौता करते है। उन्हे

छोड़ते है किन्तु अपने विचारों से वे कभी कोई समझौता नहीं करते है। यह एक सामान्य से लेखक की उसकी अपनी लेखकीय दायित्व के प्रति प्रतिबद्धता है, अपने विचारों के प्रति प्रतिबद्धता है, सामान्य जन के प्रति एक लेखक की प्रतिबद्धता है। टेलीविजन के माध्यम से उन्होंने साहित्य व सिनेमा को एक करने की कोशिश भी खूब की। और वे चाहते थे की स्क्रिप्ट राइटर का कोर्स चलाया जाए। साहित्य व सिनेमा को पास-पास लाया जाए। यह सब उनकी कोशिशें थी। साहित्य व सिनेमा के प्रति। आज यह कई जगह पढ़ाया जा रहा है। यह उनकी कोशिश का ही प्राप्य है।

कमलेश्वर साहित्यिक कहानियों पर आधारित प्रथम कार्यक्रम 'दर्पण' की प्रस्तुति भी की। जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं को कहानियों का नाट्य रूपांतरण के साथ प्रस्तुत किया जाता था। कमलेश्वर लोकप्रिय दूरदर्शन धारावाहिक कार्यक्रम चंद्रकांता का लेखन कर अपार सफलता व लोकप्रियता अर्जित की थी।

कमलेश्वर रनिंग कमेंट्री में भी खूब सफलता अर्जित की थी। वे राष्ट्रीय पर्वों पंद्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी के साथ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों व घटनाओं (प. नेहरू लाल बहदूर शास्त्री, इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी व मदर टरेसा की अंतिम यात्राओं) की रनिंग कमेंट्री की प्रस्तुति दी है। आजादी के पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर इनके द्वारा लिखित व मंचित हिंदोस्ता हमारा नाटक अपार सफलता अर्जित किया था।

सम्मान:

कमलेश्वर जी ने लेखन में हमेशा अपने विचारों को महत्त्व दिया। वे कभी किसी को खुश करने के लिए नही लिखा। न पुरस्कृत होने के लिए लिखा। वे सामान्य मनुष्य के जीवन को जैसे देखते है वैसा ही चित्रित करते है। शासन तंत्र में यदि उनको किसी तरह की विसंगतिया दिखती है तो वे

बिना किसी लाग लपेट अपनी बात करते है। एक निष्पक्ष साहित्यकार किसी पक्ष या प्रतिपक्ष में नहीं लिखता बल्कि वह जो सच्चाई देखता है उसे वह लिखता है। इसे कोई अपना पक्ष या प्रतिपक्ष भले ही समझे पर एक साहित्यकार हमेशा निष्पक्ष होता है। कमलेश्वर का दृष्टिकोण निष्पक्ष है। वे शासन सत्ता को छोड़ते नहीं है। उस पर लिखते पढ़ते उसकी खामियाँ उसकी कमजोरियों को उजागर करते रहे। और अपने विचारों पर अडिग रहे। कमलेश्वर के जीवन का अंतिम पड़ाव सम्मान को दृष्टि से अत्यंत समृद्धि है। उन्हे प्राप्त सम्मान इस प्रकार है।

फिल्मफेयर पुरस्कार 1979 सर्वश्रेष्ट पटकथा हेतु पति पत्नी और वो के लिए।

हिन्दी अकादमी दिल्ली का शलाका सम्मान 2001 ई.।

साहित्य अकादमी पुरस्कार 2003 ई. कितने पाकिस्तान के लिए।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का प्रेमचंद पुरस्कार 2003 ई.।

बिहार सरकार का शिवपूजन सहाय शिखर सम्मान 2004 ई.

पद्मभूषण 2005 ई.।

हिमांचल प्रदेश का प्रथम शिखर सम्मान 2006 ई.।

यह कमलेश्वर को प्राप्त विभिन्न पुरस्कार व सम्मान है। किन्तु कमलेश्वर ने जो सम्मान सामान्य जन से अर्जित किया वह उनके लिए सबसे बड़ा सम्मान रहा। और कमलेश्वर उसे ही अपना सबसे बड़ा सम्मान मानते रहे और उसके लिए लिखते रहे।

कृति परिचय:

किसी भी लेखक या साहित्यकार की सबसे बड़ी कमाई उसका लेखन होत है। वह रचनाओं में ही अपने विचारों के संसार का निर्माण करता है। अपने विचारों को स्थापित करता है। बेहतर समाज की संकल्पना करता है। ये रचनाएं उसकी जमा पूँजी होती है। और इन्ही रचनाओं में वह विचार के रूप में जीवित रहता है। इससे ही वह एक बेहतर इंसान व समाज के निर्माण में योगदान करता है। और रचना व रचना में निहित विचार ही किसी लेखक के महत्त्व को रेखांकित करते है। जिस साहित्यकार में अपने समय की पहचान और आने वाले परिवर्तनों की आहाट का अनुमान जितना गहरा होता है उसकी रचनाएं उतनी ही प्रासंगिक व अर्थवान होती है। और जिस साहित्यकार के पास अनुभाव संसार जितना विस्तृत व व्यापक है उसका रचना संसार ही उतना ही विस्तृत, व्यापक व प्रामाणिक होता है। रचनाएं संसार के समक्ष एक प्रति संसार का निर्माण करती है। अपने समय के तमाम अवरोधों को तोड़ती है। अपने समय के अधेरों से मुठभेड़ लेती है। वे एक उजास से भरे संसार का निर्माण करती है। और समाज में व्याप्त अधेरे को छाटने की लगातार कोशिश करती है। इस प्रकार साहित्य अज्ञानता और संकीर्णता की चौखट पर उजास की दस्तक देता है। यह सब एक सजक साहित्यकार का दायित्व के द्वारा ही संभव हो पाता है। कमलेश्वर भी अपने समय की आहट लेते है। उसकी विसंगति को पकड़ते है। समाज के स्थिति-परिस्थिति को देखते है। मूल्यों के संकट व संक्रमण को देखते है। और पतन में जाती हुई मनुष्यता को देखते है। यही कारण है कि कमलेश्वर का जोर सबसे अधिक मनुष्यता व मूल्यों के बचाने में है। कमलेश्वर का लेखन अपने युग के सत्याभिव्यक्ति का साहित्य है। इस पर प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र यादव की टिप्पणी ध्यातव्य है "कमलेश्वर अपना सच नहीं बोल सकता, मगर अपने युग और पीढ़ी का सच

वह जरूर बोल सकता है। उसके पास जबान है और उसे बात करनी भी आती है, क्योंकि इसी समय सच पर आकर बड़े-बड़े जबानदार लोग चुप हो जाते है।"22

कमलेश्वर का साहित्य मनुष्यता को बचाने का साहित्य है। मनुष्य के जीवन संघर्षों का साहित्य है। बदलते जीवन मूल्यों का साहित्य है। टूटते संबंधों का साहित्य है। विखरते संवेदनाओं का साहित्य है। कमलेश्वर का साहित्य मनुष्यता को बचाने की अपील करता हुआ साहित्य है। जीवन के तमाम उदासियों के बाद सकरात्मकता का संचार करने वाला साहित्य है। बदली हुई परिस्थितियाँ तो कमलेश्वर के यहाँ है किन्तु उनमें संतुलन को साधने की कोशिश भी है। डॉ. बन्दना अग्निहोत्री जी कमलेश्वर के कथा साहित्य पर लिखते हुए कहती है कि, "कमलेश्वर जी का कथा-साहित्य कस्बाई मनोवृत्ति, शहरीकरण एवं सांप्रदायिकता के दुष्परिणामों को समाज के सम्मुख लाने वाला है। उन्होंने व्यक्ति की व्यथा और उसकी असमर्थता को पाठकों के सामने लाने में सफलता प्राप्त की है।....उनकी कहानियों और उपन्यासों में स्वाधीनता के बाद के मोहभंग, पारिवारिक विघटन, मानसिक तनाव, व्यक्ति का अकेलापन, महानगरों के जीवन की ऊब तथा सम्प्रदायिकता आदि का चित्रण मिलता है।"23

कमलेश्वर के साहित्य की भावभूमि मनुष्य के शाश्वत मूल्यों की भावभूमि है। साहित्य की परंपरा में प्राप्त मूल्यों की भावभूमि है। जो मनुष्य को मनुष्य बनाने वाले विचार है उन विचारों की भावभूमि का साहित्य कमलेश्वर का साहित्य है। जिस विषय में नयी कहानी की भूमिका में कमलेश्वर जी लिखते है कि "कबीर का विद्रोह, सामाजिक न्याय की मांग और बंधुत्व का आग्रह भारतेन्दु की भारतीयता और आजादी का हक, प्रसाद की मानवतावादी मूल्यों के पुनर्निर्धारण की आकांक्षा और उत्तरवर्ती प्रेमचंद द्वारा यथार्थ का ग्रहण और मानवीय संकट की व्याख्या - यह था वह क्रम, जो नई विचार संपदा की विरासत थी।"24 विरासत में प्राप्त इन साहित्यक मूल्यों,

साहित्यिक विचारों के साथ कमलेश्वर अपने समय से टकराते है। किन्तु कमलेश्वर के समय समाज की गति बदल चुकी है। उसकी स्थितियाँ परिस्थितियाँ दूसरी है। उनके समय की समस्याएं दूसरी थी। लेकिन साहित्य सदैव अपने समय की जवाबदेही लेकर ही चलता है। साहित्य सिर्फ मनोरंजन या हास्य व्यंग्य ही नहीं है बल्कि वह अपने समय की, अपने समाज की जिम्मेदार अभिव्यक्ति भी है। साहित्य अपने समय अपने समाज का आदर्श रचता है। अपने समय से आँख मिलाकर चलता है। कमलेश्वर का साहित्य इन अर्थों में खरा उतरता है। और वे अपने समय के जागरूक व जिम्मेदार साहित्यकार के नाते उन सब विषयों पर लिखते है जो उनके समय में व्याप्त है। वे कहते है कि "विभाजन, मोहभंग, यांत्रिकता, विसंगतियाँ, परिवारों का विघटन, राजनीतिक भ्रष्टाचार और व्यापक असंतोष के बीच जो मनुष्य साँस ले रहा था, जिसका समकालीन साहित्य जवाबदेही से कतारा रहा था।.....या जिसके आंतरिक और बाह्य संकट को अभिव्यक्ति नही दे पा रहा था, वह मनुष्य इतिहास के क्रम में अपने पूरे परिवेश को लिए-दिए एक अवरुद्ध राह पर संभ्रमित और चकित खड़ा था।"25

इसके साथ ही साथ कमलेश्वर के लेखन पर कस्बाई जीवन का प्रभाव भी देखने को मिलता। डॉ. घनश्याम 'मधुप' के विचार द्रष्टव्य है, "कस्बाई निम्न मध्यवर्ग के वर्ग-वैषम्य, शोषण और सामाजिक असमानता का चित्रण लेखक ने अपनी प्रगतिशील विचारधारा के आधार पर किया है। लेकिन यह प्रगतिशीलता यशपाल या नागार्जुन जैसी राजनीतिक सिद्धांत-प्रधान नही है। जीवन के संघर्षों से उत्पन्न उनकी यह विचारधारा हर मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की है।"26 कमलेश्वर का रचना संसार अत्यंत विस्तृत है। जो कस्बों से लेकर महानगरों के जीवन तक विस्तृत है। कमलेश्वर के कहानियों व उपन्यासों के लेखन की यही पृष्ठभूमि है। जिस पर उनका लेखन अपनी पीठ टीका कर खड़ा हुआ है। कमलेश्वर के लेखन की संवेदनाएं मनुष्य जीवन की संवेदनाएं है।

कमलेश्वर का रचना संसार अत्यंत विस्तृत है। उसमे उपन्यास, कहानी के अलावा यात्रा साहित्य, आत्मकथा, आलोचना, संपादन, संपादक, पटकथा व संवाद, अनुवाद इत्यादि विधाओं को भी ले लिखे उपन्यास व कहानी जैसी मजबूत पकड़ वे इन सब पर भी रखते है। कमलेश्वर का सृजन संसार इस प्रकार है-

उपन्यास साहित्य:

आधुनिक साहित्य मे विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास सबसे अधिक सबल, समृद्ध, चर्चित व पठित विधा के रूप मे अपनी जगह सुनिश्चित किया है। इस समृद्धि, सफलता व लोकप्रियता को देखते हुए ही उपन्यास साहित्य को आधुनिक साहित्य मे महाकाव्य की संज्ञा दी गई है। साथ ही उपन्यास साहित्य की केन्द्रीय विधा के रूप में अपनी जगह बना लिया। आलोचकों का ध्यान अपनी तरफ आकृष्ट किया। वाद-विवाद व संवाद के नये सूत्र विकसित होते है। विचार की नई खिड़किया खुलती है लेकिन समय के साथ इसमे परिवर्तन होता चलता है। यह पड़ाव कई चरणों में है। लेकिन इसका एक मुख्य पड़ाव है स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले का उपन्यास तो दूसरा है स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का उपन्यास। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के साहित्यकारों में कमलेश्वर का नाम बड़े साहित्यकार के रूप में बड़े ही आदर व सम्मान के साथ लिया जाता है। कमलेश्वर अपनी लेखनी से हिन्दी उपन्यास को एक नयी दिशा व गति देता है। कमलेश्वर के लेखन का दायरा सामान्य मनुष्य की जिंदगी का दायरा है। जिसमें रोजी-रोटी, संघर्ष, प्रेम, आस्था, संवेदनाएं, निराशाएं आदि का यथार्थ चित्रण मिलता है। उपन्यासकार कमलेश्वर के लिए यह कहा जा सकता है कि वे उपन्यासकार के रूप में बहुत बाद में स्थापित होते है उसके पहले वे एक बड़े व सफल कहानीकार के रूप में स्थापित हो चुके होते है। उपन्यासकर के रूप में वे पहले छोटे-छोटे या लघु उपन्यास लिखते है। किन्तु उनके जीवन के अंतिम पड़ाव पर आया उनका उपन्यास कितने पाकिस्तान उन्हे

एक बड़ा उपन्यासकार व बड़ी दृष्टि के उपन्यासकार के रूप में स्थिर कर देता है। कमलेश्वर के द्वारा लिखित उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

एक सड़क सत्तावन गलियाँ (बदनाम बस्ती)

एक सड़क सत्तावन गलियाँ कमलेश्वर का प्रथम उपन्यास है। जो 1956 ई. में लिखा गया था और उसी वर्ष अमृतराय ने इसे हंस में छापा भी था। 68-69 के करीब प्रेम कपूर में इस पर बदनाम बस्ती नाम से फिल्म बनाई। प्रथम औपन्यासिक लेखकीय उपलब्धि होने के कारण यह उपन्यास कमलेश्वर को अत्यधिक प्रिय था। लेकिन आर्थिक तंगी के चलते वे इसे पंजाबी पुस्तक भंडार के श्री अमरनाथ के हाथों आठ सौ रुपये में बेच दिया था। तब इसके सर्वाधिकारी अमरनाथ हो जाते है। लेकिन बेचने के बाद वे इसके लिए अंदर ही अंदर घुटते रहे। जिसका जिक्र वे स्वयं करते है- "मेरे लिए यह उपन्यास उतना ही प्रिय है, जितनी प्रिय मेरे लिए मेरी माँ और मेरी जन्मभूमि मैनपुरी रही थी। इसे बेचकर करीब बीस साल मेरी आत्मा दुखती रही-लगता रहा, जैसे मैंने अपनी जन्मभूमि या माँ बेच दी हो।"27

एक सड़क सत्तावन गलियाँ कस्बाई पृष्टभूमि का उपन्यास है। इसमे मैनपुरी को आधार बनाकर कस्बाई जीवन को प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास की कथावस्तु आजादी के पूर्व से लेकर आजादी के बाद तक की है। जिसमें कस्बाई जीवन में निम्न मध्यवर्ग का सजीव व यथार्थ चित्रण लेखक ने किया है। कमलेश्वर आम आदमी के लेखक है। वे जमीन पर रहकर आसमान की बात नही करते बल्कि जमीन पर रहते हुए जमीनी हकीकत की बात करते है। और अपने आस-पास बिखरी हुई जिंदगी को उठाते है और उसे पूरी संवेदना के साथ व्यक्त करते है। आजादी के लिए लड़नेवाले लोगों ने जिस स्वप्न की कल्पना की थी, वह स्वप्न-स्वप्न ही रह जाता है और आजादी से लोगों में एक मोहभंग की स्थिति पैदा होती है। जिसका चित्रण कमलेश्वर इस उपन्यास में मास्टर हबीब,

संपादक निर्मोही और बाजा मास्टर जैसे असंख्य व्यक्तियों की आकांक्षाओं, संघर्षों व स्वप्नों के दास्तान की कहानी यह उपन्यास करता है। कम्यूनिष्ट-कांग्रेस विवाद, कस्बे में व्याप्त सांप्रदायिकता, रामलीला और नाटक मंडली, समाचार पत्रों की दयनीय स्थिति, ड्राइवरों के व्यस्त जीवन का तनाव और प्रेम में टूटते बिखरते जीवन का यथार्थ सब कुछ विश्वसनीयता के साथ उपन्यास में प्रस्तुत है।

स्वरूप की दृष्टि से यह एक लघु उपन्यास है। किन्तु कथावस्तु की दृष्टि से एक विराट व घटनाओं से सघन उपन्यास है। प्रथम उपन्यास होने के कारण शायद कमलेश्वर उपन्यास में नायक नायिका का सृजन उस मजबूती से नही कर सके है जैसा होना चाहिए। डॉ. सुधारनी सिंह का अभिमत है कि, "इस उपन्यास के विषय में वैसे सच बात है कि इसका नायकत्व बिखर गया है, जिसकी खोज सरनाम सिंह, शिवराज और रंगीले के खंडित व्यक्तियों में की जा सकती है। इसी तरह नायिका की स्थिति है- बंसी, हेम और कमाला के संयुक्त स्वरूप ही नायिका की पूर्ति कर सकता है। अकेला किसी का व्यक्तित्व इस पद तक नही पहुँच पाता है।"28 कमलेश्वर के उपन्यासों में नायकत्व की खोज शायद बेमानी है। क्योंकि नायकत्व से अधिक इनके यहाँ स्थितियाँ और परिस्थितियाँ मुखर होकर बयां होती है। वे समाज का प्रतिनिधित्व करती है। परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करती है। अक्सर परिस्थितियाँ ही नायकत्व का प्रतिनिधित्व करती है। कमलेश्वर का यह भले ही पहला उपन्यास रहा पर पाठकों के मध्य लोकप्रिय रहा। और अपने समय के विसंगतियों को व्यक्त करने मे सफल व समर्थ रहा।

लौटे हुए मुसाफिर

लौटे हुए मुसाफिर कमलेश्वर द्वारा लिखा गया उनका दूसरा महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। जो 1965 में प्रकाशित होता है। देश आजादी के साथ विभाजन का दंस झेला। उसी विभाजन को आधार बनाकर

लिखा गया यह उनका एक मानवतावादी उपन्यास है। विभाजन एक ऐसी त्रासदी है जिसकी मार जनता अपना सब-कुछ गवाकर उसको भुक्ता है। लौटे हुए मुसाफिर उपन्यास की पृष्टभूमि कस्बाई है किन्तु कथावस्तु विभाजन पर आधारित है। लेखक ने चिकओं (नटो) की बस्ती को आधार बनाकर उनकी कथा बुनी है। जिसमे उनके उजड़ने और उस बस्ती के हिंसक हो जाने की दास्तान दर्ज है। फिर उस बस्ती से पलायन कर चुके कसबाइयों की दूसरी पीढ़ी लौट कर आती है मुसाफिर बनकर। इन हुए मुसाफिरों को नसीबन कैसे आत्मीयता से सहारा देती है। लेखक का यही मुख्य प्रतिपाद्य है। क्योंकि विपदा के समय सहारा ही काम आता है विद्वेष नहीं। नसीबन इस उपन्यास में यही करती है। यह उसकी मनुष्यता व संवेदना ही है जो विभाजित मानसिकता को जोड़ सकती हैं, उसे एक कर सकती है। समाज को उसकी जरूरत है। लेखक नसीबन के माध्यम से यही कहना चाहता है की हम मनुष्य है तो हममे मनुष्यता सर्वोपरि होनी चाहिए। इस तरह वे नफरत को प्रेम से काटते है। नफरत को प्रेम से खारिज करते है। और मनुष्यता को बचाने का अंततः यही एक रास्ता भी है कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं है। इस तरह वे इस उपन्यास में एक मानवीय दृष्टिकोण को स्थापित करते है।

तीसरा आदमी

इस उपन्यास की विषयवस्तु महानगर में संघर्षरत एक मध्यवर्गीय परिवार है। जिसमें पति-पत्नी और उनका एक मित्र है। इसमें लेखक ने दिखया है कि मध्यवर्गीय व्यक्ति को व्यक्तिगत जीवन संघर्षों के साथ पारिवारिक स्तर पर भी संघर्ष करना पड़ता है। जिसमें संत्रास है, घुटन है, आर्थिक अभाव है, हताश है, हीनता है, कुंठा है। और यह सब स्थितियाँ पैदा हो रही है आर्थिक तंगी के कारण। यह सच है कि आज के संबंधों में आर्थिक स्थिति की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस बात को हम नकार नहीं सकते है। यही विवशता इस उपन्यास मे सुमंत के साथ है। सुमंत की आर्थिक

स्थिति ऐसी नहीं है की, वह अपने लिए दिल्ली में किराये पर एक मकान ले सके। जिसमें वह अपने परिवार यानि पत्नी के साथ रह सके। इस विवशता मे वह अपने मित्र नरेश के साथ उसके घर पर रहता है। जो एक ही रूम का घर है वह भी सीलन भरा। जहाँ रहने मे सबका दम घुटता है। किन्तु आर्थिक विवशता के चलते उसी में रहते है। और यही से बात धीरे-धीरे तीसरे व्यक्ति तक पहुँचती है। दो के मध्य तीसरे का प्रवेश यही होता है। और फिर धीरे-धीरे नरेश को लगता है की चित्रा सुमंत के साथ ज्यादा सहज है, सहज हो कर रहती है और उससे बातें करती है। यह बात नरेश के मन में शंका की तरह जमती चली जाती है। और अंत मे अपनी कुंठा लिए नरेश चित्रा से अलग पटना चला जाता है और सुमंत भी आत्महत्या कर लेता है। यह इस उपन्यास का अंत है जो त्रासद पूर्ण है लेकिन सच्चाई भी है। इस पूरे उपन्यास में सुमंत, चित्रा व नरेश के मध्य तीसरे व्यक्ति की रूप में काली छाया की तरह विद्यमान है। और इस तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति तीनों के जीवन को विखंडित व विसंगतिमय कर देती है।

उपन्यास मे कस्बाई व महानगरीय बोध को भी दिखाया गया है। नगरीय रुझान का मोह भंग भी इसमें चित्रित है। नरेश महानगरीय जीवन से ऊब कर कस्बे की तरफ रुख करता हुआ दिखायी पड़ता है। नरेश को महानगर में ऊब, अनिश्चयात्मकता, अस्थिरता, वासना, बिखराहट, कटुता, ईर्ष्या, से ऊब होती है। इस तरह यह एक ऐसा उपन्यास है जो आदमी को कई परतों में खोलता चलता है। और जितनी परतों में वह खुलता है उसकी विवशता उतनी ही बढ़ती चलती है और अंत में वह उन सबसे ऊब जाता है। जीवन से थका हुआ, हारा हुआ, स्वयं को विवश पाता है। यह आज के मनुष्य की नियति भी बन गई है। यह समय की अपनी विसंगति भी है और यथार्थ भी।

डाक बंगाल

डाक बंगाल उपन्यास मे मूलतः स्त्री व्यथा की कथा है। जिसमें डाक बंगाल प्रतीक है। इस उपन्यास पर इसी नाम से फिल्म भी बन चुकी है। इरा के माध्यम से लेखक ने इसमें स्त्री जीवन के अवसाद, त्रासद, कष्टदायक अनुभूतियों को प्रस्तुत किया है। भावनाओं के अत्यधिक उभार के कारण इसमे कहीं-कहीं भाषा का विखराव भी दिखाई पड़ता है। विवरणात्मकता भी इस उपन्यास में थोड़ी सी ज्यादा दिखाई पड़ती है। इरा उन्मुक्त जीवन जीने में विश्वास रखने वाली लड़की है। लेकिन यह जैसे एक मीठा ख्वाब हो, जो हमेशा अधूरा ही रहने वाला होता है। इरा भी अपने जीवन में इस मीठे ख्वाब से टकराती है। लेकिन उससे टकरा कर स्वयं टूट जाती है और ख्वाब अधूरे छूट जाते है। इरा का जीवन एक तरह से खुला जीवन है। उसमें कही कुछ छुपाव नही है। और इसके साथ ही इरा के जीवन में कई पुरुषों का संग साथ है। लेकिन उसे अपनी संपूर्णता का कहीं आभास नहीं होता है। वह हमेशा अधूरी ही रही, अपनी संपूर्णता वह कभी नहीं पा सकी। इरा विमल, बतरा, डाक्टर व तिलक के जीवन में अलग-अलग समय पर अपने वजूद को खोजती हुई प्रविष्ट होती है लेकिन कहीं भी उसे अपना वजूद नहीं मिलता, उसे संपूर्णता नहीं मिलती है। हर जगह वह अधूरी की अधूरी रह जाती है। वह शादी विमल से करना चाहती थी। पर नियति ऐसी की बतरा व डाक्टर के साथ वह वैवाहिक जीवन को जीती है। अधूरे रूप में। और अंत में विमल के साथ बहुत थोड़े से समय वह बीता पाती है। और वह अपने जीवन का अवलोकन करते हुए कहती है कि, “जो भी मेरी जिंदगी में आया। उसने जाने-अनजाने घुमा-फिराकर या सीधे-सीधे हमेशा यही जानने की कोशिश की कि मैंने पहले किसी से प्यार तो नही किया, पुरुष का यही सबसे बड़ा संतोष है और हर बार मैंने अपने हर प्रेमी से यही कहा कि तुम मेरी जिंदगी में पहले हो, तुम प्रथम हो।”29 इरा पुरुष मानसिकता के चुनौतीयों पर सवाल करती है। वह तर्कशील है।

किसी बात को भावनाओं मे आकार स्वीकार करने वाली नही है। कहती है कि, “पर तिलक ! यह तुम्हारी दुनियाँ बहुत कमीनी है। यहाँ औरत बिना आदमी के रह ही नही सकती।...चाहे उसके साथ पति हो, या भाई, या बाप। कोई न हो तो नौकर ही हो। पर आदमी की छाया जरूर चाहिए। यह कैसा विधान है।”30 इस तरह स्त्री-पुरुष के संबंधों को लेकर इरा कई सारे तर्कशील सवाल करती है। जिसका जवाब सामान्यतः पुरुष के पास नहीं है। और उपन्यास स्त्री जीवन के कई सारे प्रश्नों को करता है। उसके जीवन को देखता है।

समुद्र में खोया आदमी

यह एक पारिवारिक उपन्यास है। ऐसा परिवार जिसकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नही है। समुद्र यहा समाज का प्रतीक है। जहाँ जीवन संघर्ष व मजबूरीयों से बधा चल रहा है। और यह समाज समुद्र से भी ज्यादा गहरा, विशाल व खतरनाक है। इस समाज की तृष्णाएं एक सामान्य मनुष्य को अपने आर्थिक जाल में कैसे उलझा देती है। यह दर्दनाक है। इसका उदाहरण बीरन है जो इस उपन्यास का मुख्य पात्र है। उपन्यास कई छोटे-छोटे शीर्षकों में बटा है। जो अलग-अलग परिस्थितियों को बया करते है। भयंकर आर्थिक तंगी के बीच एक परिवार का टूट कर बिखर जाना इस उपन्यास का मुख्य प्रतिपाद्य है।

काली आँधी

काली आँधी एक राजनीतिक उपन्यास है। किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से यह पारिवारिक भी है। राजनीति के मध्याम से परिवार की भी गाथा है। व्यक्ति अपने निजी लाभ के लिए या राजनीतिक उपलब्धियों के लिए कैसे अपने परिवार का इस्तेमाल या त्याग करता है। यह सवाल किया गया है। और साथ मे यह भी की व्यक्ति के लिए परिवार अहम है की राजनीति या अन्य कुछ। परिवार समाज व

व्यक्ति की सबसे केन्द्रीय धुरी है। परिवार के बिना व्यक्ति व समाज के सुखद जीवन की कल्पना संभव नहीं है। परिवार के बिना बड़ी से बड़ी उपलब्धि भी एक समय के बाद अर्थ हीन हो जाती है। कोई सफलता कितनी ही बड़ी क्यों न हो। सबकी सार्थकता परिवार के मध्य ही होती है।

राजनीति कैसे चीजों का इस्तेमाल अपने हित में करती है। राजनीतिक चाल बाजियाँ, छल, छदम, दाव पेच, सबका बड़ा ही यथार्थ चित्रण इस उपन्यास मे किया गया है। जिसमें मुख्य चरित्र के रूप में जग्गी बाबू, मालती व बेटी लिली है। जग्गी बाबू व मालती पति-पत्नी है। लेकिन राजनीतिक सफलताओं के पीछे मालती पति जग्गी बाबू व बेटी लिली का भी त्याग कर देती है। सफलताओं के दौर मे आत्मीय संबंधों का बेमौत मारना मनुष्य के असंवेदनशीलता का प्रतीक है। लेकिन राजनीति जैसे इन सबकी छूट देती हो। तभी तो मालती यह सब कर पाती है।

राजनीति मे अवसरवादिता किस कदर हावी है। इस पर टिप्पणी करते हुए जग्गी बाबू कहते है कि - "तुम लोगों ने आदमियों के आँसूयों और जज़्बातों तक को नही छोड़ा...उसकी आशाओं और सपनों तक को नही बख्शा...तुमने उसके सपनों को नारे बनाकर निचोड़ लिया। अब क्या बचा है आदमी के पास।"31 इसी तरह से मालती जी सफलता की सीढ़िया चढ़ती जा रही थी। जिसमे लोगों के साथ उनका क्या स्वभाव है या वह लोगों को किस तरह से महत्त्व देती है। वह बात जग्गी बाबू के इस कथन से बया होती है, "जरूरत के बगैर आपके लिए जरूरी नही होता, और व्यक्त की अहमियत के बगैर बेवक्त आप किसी को बुलाती नही !"32 इस उपन्यास मे यही दिखाया गया है की सफलताओं के दौड़ मे अंधा व्यक्ति सफल होने पर सबसे पहले वह अपने प्रिय संबंधों को ही खत्म कर लेता है। यह आज भी है कि व्यक्ति सफलता के बाद नये संबंधों मे स्वयं को रखना ज्यादा अच्छा महसूस करता है। और अपने संघर्ष के दिनों के संबंधों को वह अक्सर भूला देना

चाहता है। यह सफलता की विकृति है। मालती भी अपनी सफलताओं में पति व बेटी से दूर अपनी दुनियाँ में सफर करती है। राजनीतिक विसंगति बड़ी गहराई से इस उपन्यास में अभिव्यति हुई है।

आगामी अतीत

आगामी अतीत का कथ्य पूँजीवादी समाज के स्पर्धामूलक परिवेश की विडंबना है। बाकी बीच-बीच में रोमांटिकता का भाव भी छौक की तरह है। किन्तु वह मूल कथ्य के सहायकार्थ ही है। पर इसकी रोमांटिकता थोथी रोमांटिकता के लिए नही है। इसमें भी अफसफल संबंधों की कहानी को लेखक ने बुना है। इसमे महानगरों की जिंदगी का बड़ा ही यथार्थ चित्रण किया गया है। मुख्य पात्र के रूप में चाँदनी का वर्णन है। इसमे महानगरीय जीवन के दुख दर्द, आशा, आकांक्षा, निराश, अभाव, इत्यादि को व्यक्त किया गया है। चाँदनी एक ऐसा चरित्र है जिसे सभ्य समाज वेश्या कहता है। उस वर्ग की पात्र है। पर उसे वह पूरे ईमानदारी के साथ अपना व्यवसाय मानकर करती है। वह कहती भी है की. “जो होना था हो गया, अब चाँदनी किसी के हत्थे नही चढ़ेगी। इस धंधे की भी दुनिया बुरी नही हैं।”33 चाँदनी के चरित्र में लेखक ने जो स्वाभिमान डाला है वह एक सजग स्त्री का स्वाभिमान है। वह अपने स्त्री होने के स्वाभिमान को बचा कर रखती है। कमल बोस इस उपन्यास मे पुरुष पात्र के रूप में आया है। जो चाँदनी को देह व्यापार के दलदल से निकालना चाहता है क्योंकि वह उसकी ही बच्ची है। पर वह उसे वहाँ से लाने मे असफल होता है। उपन्यास स्त्री दृष्टिकोण से एक सशक्त व सफल उपन्यास है।

वही बात

उपन्यास का कथ्य एक महत्त्वकांक्षी पति व उसकी दमित पत्नी के दवंद पर बुना गया है। स्त्री-पुरुष के संबंधों पर लिखा गया उपन्यास है। पति अपने महत्त्वाकांक्षा में इतना डूबा है की उसे ऐसा

लगता है वह पत्नी के साथ नही बल्कि अकेले रहता है। उपन्यास में रिश्तों के पुराने ढ़ाचे भी तोड़े गए है। व्यक्ति की इच्छा का खयाल ज्यादा रखा गया है। फालतू की वर्जनाओ को निकाल फेका गया है। उपन्यास में समीरा व प्रशांत पति-पत्नी के रूप में है। प्रशांत का सहायक अभियंता नकुल है। समीरा पति प्रशांत के मशीनी व महत्त्वकांक्षी जीवन से ऊब कर बाद में नकुल के साथ शादी कर लेती है। उपन्यास एक स्त्री को भी अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीने की इजाजद देता है। खजांची बाबू बड़े ही खुले विचारों के व्यक्ति है। और वे इस बात का समर्थन देते हुए कहते है कि "औरत को अपनी जिंदगी जीने का हक क्यों नही है ? हम कब तक उसे बेइज्जत करते रहेगे ? आदमी औरत बदल ले तो ठीक ! औरत आदमी बदल ले तो तो गलत ! वाह ! वाह ! क्या मैथेमेटिक्स हैं।"34 इस तरह उपन्यास व्यक्ति व समाज की समीक्षा करते हुए कुछ नए जीवन सूत्रों की खोज भी करता है। और उसकी इजाजत भी देता है।

सुबह...दोपहर...शाम

यह उपन्यास आजादी के पूर्व भारतीय समाज के परिवेश पर आधारित है। एक शहरी मध्यवर्गीय परिवार की दिनचर्या के माध्यम से इसकी कथा बढ़ती है। इसमें परिवार एवं देश प्रेम का एक मिलाजुला रूप भी है। उपन्यास की सबसे वयोवृद्ध पात्र दादी पर आजादी के आंदोलन का गहरा प्रभाव है। और वे चाहती है कि परिवार के किसी भी सदस्य का किसी भी तरह का संबंध अंगरेजी साम्राज्य से न रहे। लेकिन दादी का यह ख्वाब पूरा नहीं होता है। पोता जसवंत अंग्रेजी सरकार में नौकरी करता है। तो दादी इस बात का विरोध दर्ज करती हुई घर छोड़ कर जंगल में चली जाती है। कि यह घर अब उनके अनुकूल नहीं है। दो पीढ़ियों की भिन्नता और जीविका की मजबूरी यानि देखे तो इसमे एक ही परिवार में जो आदर्श की भिन्नता है। वह दिखाई पड़ती है। दादी का रुख पुराने आदर्शों के प्रति बना हुआ है। एक प्रकार से इसमे दो पीढ़ियों का द्वन्द्व समाहित हुआ

है। एक पीढ़ी जो आदर्शों को लेकर चल रही है तो दूसरी पीढ़ी अपने जीविका का लिए वहाँ नौकरी करता है। जहां से पहली पीढ़ी को नफरत है। यह उपन्यास स्वदेशी आंदोलन की याद दिलाता हुआ उपन्यास है।

रेगिस्तान

आजादी के सपनों का टूटना और उनका बिखराव ही इस उपन्यास का कथ्य है। मुख्य सवाल के रूप में यह प्रश्न है की आखिर आजादी मिली तो किसे मिली। यह कुछ लोगों के लिए है या सबके लिए। कौन है वे लोग जो इसका लाभ ले रहे है। और कौन है वे लोग जो आज भी पहले जैसे ही पीस रहे है। सवाल बड़ा ही गहरा है किन्तु अनुत्तरित नही है। क्या शासन और सत्ता का अपने हाथों में आ जाना ही आजादी है या और कुछ भी। ऐसे सवाल इसमे उठाए गए है।

इस उपन्यास पर गाँधीवादी प्रभाव भी है। कमलेश्वर अपने किसी उपन्यास पर गांधीवादी प्रभाव को नही आने दिया है किन्तु यह उपन्यास गांधीवादी विचार, आदर्श पर रचा गया उपन्यास है। सवाल है की जैसे गांधी के विचारों के पीछे लाखों लोग चलते थे किन्तु आजादी के बाद क्या वह आदर्श कही खो गया है। या वह केवल रेगिस्तान बन कर रह गया है। उपन्यास के पात्र विश्वनाथ का चरित्र ऐसे ही बनाया गया है। बहुत ही सुचिन्तित तरीके से लिखा गया उपन्यास है। और बड़ी समस्या पर लिखा गया है। देश के बदले हालातों पर लिखा गया है। गांधी के रामराज्य के बिगड़ते हालातों पर एक प्रकार से इसमे चिंता प्रकट की गई है। और सवाल भी किया गया है कि क्या यही रामराज्य का सपना था गांधी जी का। सवाल तो आज भी है।

पति, पत्नी और वह

उपन्यास एक पुरुष के वासना पर लिखा गया है। रंजीत जो बिजली विभाग में इंजीनियर है। जिसका प्रेम विवाह शारदा के साथ हुआ है और एक बच्चा भी है। पर वह अपने कार्यालय में काम करने वाली स्त्री निर्मला के साथ अनैतिक संबंधों में रहता है। वह भी उससे झूठ बोल कर की पत्नी शारदा रोग शय्या पर है। यह उपन्यास पुरुष को केंद्र मे रख कर लिखा गया है पर यह किसी भी तरह हो सकता है। इस महानगरीय जीवन के कार्यलायी संस्कृति में फैले दुराचरण का पर्दाफास किया गया है। विकृति वासना का साम्राज्य समाज में जो फैलता जा रहा है। लेखक की दृष्टि उस पर टिकी हुई है। फैलती हुई इस विकृति को कमलेश्वर लगातार उजागर करते रहे है।

अम्मा

इसमें आदर्श सामाजिकता की बात की गई है। इसमे अपने दुश्मन के साथ भी दोस्त की तरह पेश आना चाहिए की बात का समर्थन किया गया है। इस पर भी गांधीवाद का प्रभाव दिखाई देता है। इसमें अम्मा की एक ममता पूर्ण कहानी भी है।

कितने पाकिस्तान

यह उपन्यास कमलेश्वर के लेखन में मिल का पत्थर है। इसकी पृष्टभूमि विभाजन की है किन्तु उस विभाजन में लेखक सिर्फ भारत पाकिस्तान का विभाजन या दर्द नही देखता वह अपने दृष्टि में विस्तार करता है। और पूरे विश्व को इस संदर्भ में देखता है। विश्व में जो भी मनुष्य पर धर्म के नाम पर, मजहब के नाम पर, संप्रदाय के नाम पर, नस्ल के नाम पर, रंगभेद क आधार पर, या किसी अन्य तरह के भेदभाव के चलते जो इंसान पर क्रूरताएं की गई है। उन सबकी पड़ताल कमलेश्वर इस उपन्यास में करते हैं। इसमें उनकी दृष्टि विश्व दृष्टि है। वे सम्पूर्ण मनुष्यता के

लिए चिंतित है उसकी चिंता करते है। इसी दृष्टि का परिणाम यह उपन्यास है। वे इतिहास के लहूलुहान पन्नों में जाते है। और वहाँ दर्ज सच और झूठ को खँगालते है। जिसकी परिणिती यह उपन्यास है। यही कारण है कि यह उपन्यास अब तक के बने बनाए ढ़ाचे को तोड़ता है और उपन्यास की एक नयी शैली को विकसित करता है। यह उपन्यास की खास बात है। यह विश्व की संस्कृतियों का अन्वेषण भी करता है। उसमे जो कुछ अमानवीय है उसे उजागर भी करता है। और लेखक विश्व मे अमन-चयन, मनुष्यता, दया, करुणा आदि को बचाए रखने की अपील करता है। और कहता है कि यही वे सूत्र से जिससे विश्व मे शांति भाईचारा एकता को स्थापित किया जा सकता है। और मनुष्य व मनुष्यता को बचाया जा सकता है। और आज सबसे अधिक इसी की जरूरत है विश्व में। इसकी चिंता लेखक की विश्व की चिंता है।

कमलेश्वर के उपन्यासों का फिल्मांकन:

कमलेश्वर के उपन्यासों पर फिल्म भी बनी है। जैसे एक सड़क सत्तावन गलियाँ उपन्यास पर बदनाम बस्ती नाम की फिल्म बनी है। डाक बंगला पर डाक बंगला नाम की फिल्म बनी। काली आँधी उपन्यास पर इसी नाम से फिल्म बनी तथा आगामी अतीत उपन्यास पर मौसम नाम की फिल्म बनी है।

कहानी साहित्य:

कमलेश्वर मूलतः कहानीकार है। उनकी चेतना में कहानी का संसार रचा बसा संसार है। कमलेश्वर की कहानियाँ उनके परिवेश की अभिव्यक्ति की कहानियाँ है। वे अपने आस-पास जो देखते है और जो कुछ असंश्लिष्ट, बिखरा, टूटा हुआ, असंगत, उलझा दिखाई दिया उसे ही वे अपनी कहानी बना लेते है। यही कारण है की उनकी कहानियों में जीवन की महक आती है। आम जन की रोज की

जो जिंदगी है वह दिखाई पड़ती है। उनकी कहानियाँ सामान्य मनुष्य के जीवन के उलझनों की कहानियाँ है। उनकी कहानियों में साँस लेने वाला व्यक्ति कोई आदर्श नहीं रचना बल्कि जीवन को जैसा वह जीता है वैसा ही प्रस्तुत कर देता है। इनकी कहानियाँ आज के जीवन की सच्चाईयों को बया करती हुई कहानियाँ है। कमलेश्वर अपने कहानियों पर बात करते हुए कहते है कि, "जब से आपने चारों तरफ की दुनिया की ओर देखना शुरू किया तो पाया, कही कुछ भी बदल नही रहा था। इसलिए मुझे बदलना पड़ा। मुझे मेरे चारों ओर के कटु यथार्थ ने बदल दिया। दसवा पास करते-करते क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी के संपर्क में आया, मार्क्सवाद की सक्रिय पठशाला में शामिल हुआ और जनक्रान्ति में शहीदों के जीवन-चरित पर छोटे-छोटे लेख लिखना शुरू किये वही से शायद लेखन की विधिवत दीक्षा मिली, और उसी में अपने निर्णय जुडते गए। यानि कहानियाँ निर्णयों का पर्याय बनती गयी। मेरे लिए कहानियाँ समय की धुरी पर सच्चाईयों के प्रति और पक्ष में लिए गए निर्णयों की कहानियाँ हैं।"35 जीवन में, समाज में जो चारों तरफ व्याप्त गजालत थी वही कमलेश्वर अपने लेखन का विषय बना लेते है। वे जीवन से दूर कहानी को खोजने नहीं जाते है, बल्कि वे जीवन को ही कहानी बनाकर पेश कर देते है। समाज के यथार्थ को पेश कर देते है। समाज में जो कुछ भी संवेदनशील दिखा वही कहानी बन गई। इसीलिए कमलेश्वर की कहानियाँ अपने परिवेश की कहानियाँ है। वे जिस शहर में रहे ह शहर उनकी कहानियों में बोलता हुआ शहर है। उस शहर का परिवेश तैरता हुआ परिवेश है। स्वयं कमलेश्वर स्वीकार करते है कि "मैं तो तब अपने वक्त और कस्बे के हालत को अपने लिए दर्ज किया करता था। वह स्वांतः सुखाय नहीं बल्कि स्वांत दुखाय वाली स्थिति थी। जो कुछ दुखता था, वही लिख लिया करता था।"36

कमलेश्वर के कथा-यात्रा के मोटे तौर पर चार पड़ाव आते है-

१. मैनपुरी से इलाहाबाद।

२. इलाहाबाद से दिल्ली।

३. दिल्ली से मुंबई।

४. मुंबई से दिल्ली।

प्रारंभ से 1950 ई. तक की अधिकांश कहानियों का लेखन मैनपुरी में हुआ। पर कुछ कहानियों का लेखन इलाहाबाद में भी हुआ।

इलाहाबाद का समय सन 1946 से 1959 तक का समय है। यह कमलेश्वर के लेखकीय जीवन का सबसे अहम समय है। यह कमलेश्वर के व्यक्तिगत जीवन के ज्यादा संघर्षों के दिन है। इलाहाबाद में लिखते हुए कमलेश्वर एक बड़े कहानीकार बन चुके थे। कमलेश्वर लिखते है कि, “इलाहाबाद का दौर मेरे लेखन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण समय है। नई कहानी आंदोलन का भी यही समय है जो श्रीपतराय की पत्रिका ‘कहानी’ के वार्षिक विशेषणकों से शुरू हुआ था। इस दौर में मैंने कस्बे का आदमी राजा निरबंसिया, देव की माँ, धूल उड़ जाती है, गर्मियों के दिन, आदि कहानियाँ लिखी।”37

दूसरा दौर इनका इलाहाबाद से दिल्ली का दौर है। इसका समय 1959 से 1966 का समय है। नयी कहानी पत्रिका निकल चुकी थी। और साथ नयी कहानी आंदोलन को कमलेश्वर, राजेन्द्र व मोहन राकेश ने मिलकर सफल बना चुके थे। और कहानी इस समय तक साहित्य की केन्द्रीय विधा के रूप मे स्थिर हो चुकी थी। और कमलेश्वर इस दौर में कस्बाई चेतना से निकल कर शहरी जीवन के ऊपपोह, संबंधहीनता, संवेदनहीनता, अकेलापन, अजनवीपन, मूल्यों का संकट संक्रमण, व शहर का शहरीपन महसूस कर चुके होते है और वे उसी भावभूमि पर कहानियाँ लिखते है। इस

दौर के महत्त्वपूर्ण कहानियों में- जार्ज पंचम की नाक, नीली झील, मांस का दरिया, खोई हुई दिशाएं, बयान, तलाश, दिल्ली में एक मौत आदि कहानियाँ लिखी।

तीसरा दौर दिल्ली से मुंबई का है। इस दौर में कमलेश्वर साहित्यकार से अधिक फिल्मकार व संपादक के रूप में अत्यधिक सफल हुए। और भारतीय भाषाओं के साहित्य के साथ जुड़ते है। कमलेश्वर महत्त्वपूर्ण कथा साहित्य की पत्रिका सारिका का संपादन सबसे लंबे अर्से तक किया। फिल्मों के लिए काम भी खूब किया। इस दौर की कहानियों में उस दिन वह मुझे ब्रीचकैंडी..,जोखिम, लाश, रातें, अपना एकांत, इतने अच्छे दिन, चार महानगरों का तापमान जैसी कहानियाँ लिखी।

चौथा और अंतिम दौर उनका दिल्ली का है। जहां वे अपने जीवन का अंतिम दौर पूरा करते है। इस दौरान उन्होंने इंतजार, विपिंगविलो, कोहरा, हवा है हवा की आवाज नही, सफेद सड़के। अपने देश में, तुम कौन हो, रावल की रेल, आजादी मुबारक जैसी कहानियाँ लिखी गयी।

कमलेश्वर की लेखन की शुरुआत मुख्यतः कहानियों से ही होता है। पर कमलेश्वर की पहली कहानी कौन है। इस पर अगल-अलग कहानियों का नाम लिया जाता है। पर इनकी पहली कहानी कामरेड है। और इनका पहला कहानी संग्रह राजा निरबंसिया है जो सन 1957 ई. में प्रकाशित होता है। इस संग्रह में कुल सात कहानियाँ हैं। जिसमें प्रमुख कहानियाँ है- देवा की माँ, मुरदों की दुनियाँ, आत्मा की आवाज और राजा निरबंसिया। दूसरा कहानी संग्रह कस्बे का आदमी है। जो 1958 में प्रकाशित होता है। इसमें कुल ग्यारह कहानियों को संकलित किया गया है। जिसमें प्रमुख कहानियाँ है- गर्मियों के दिन, बेकार आदमी और कस्बे का आदमी। खोई हुई दिशाएं नामक इनका तीसरा कहानी संग्रह 1963 ई. में प्रकाशित होता है। इसमें कुल ग्यारह कहानियों को रखा है। प्रमुख कहानियों में खोई हुई दिशाएं, जार्ज पंचम की नाक, दिल्ली में एक मौत, दुख भरी दुनिया आदि। इस संग्रह की कुछ कहानियाँ इलाहाबाद में लिखी गयी है तो कुछ कहानियाँ दिल्ली में। इस तरह

से इसे हम कस्बा व महानगर को जोड़ने वाला संग्रह भी कह सकते है। इस दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण संग्रह है। माँस का दरिया का प्रकाशन 1965 है होता है। इसमें कुछ बारह कहानियों को संग्रहीत किया गया है। इस संग्रह की प्रमुख कहानियों में तलाश, माँस का दरिया, दुखों के रास्ते, नीली झील, आदि। जिंदा मुर्दे 1969 में आता है इसमें कुल तेरह कहानियाँ है। इस दौर कहानियों को लेकर डॉ. पुष्पपाल सिंह जी कहते है कि, "इन कहानियों का स्वर भ्रष्ट व्यवस्था पर व्यंग और निजता, पहचान व इंसानी रिश्तों के बेमानी होकर बेगानेपान में बदल जाने की पीड़ा और महानगरीय जीवन में अनेक प्रकार के अकेलापन के दंश का मार्मिक चित्रण है।"38 बयान संग्रह 1968 में प्रकाशित होता है। यह एक महत्त्वपूर्ण संग्रह है। इसमें कुल छब्बीस कहानियों को रखा गया है। इसमें नागमणि, लाश, जोखिम, बयान, भूखे और नंगे लोग, फैसला, अजनबी, आजादी मुबारक जैसी महत्त्वपूर्ण कहानियाँ संकलित की गयी है। इन संग्रहों में दो महानगरों के बोध को, उसकी जिंदगी को बया किया गया है। कमलेश्वर कहते है कि, "तीसरे दौर की कहानियाँ सामान्य व्यक्ति के संघर्षों भरी जिंदगी का साक्षात्कार है...तीसरे दौर की कहानियाँ यातनाओं के जंगल से गुजरते मनुष्य के साथ और समानांतर चलने का प्रयत्न है।"39

लेखक इन कहानियों मे अपने समय को चित्रित करने में सफलता प्राप्त कर ली है। और जो परिवेश में घटित हो रहा है या टूट रहा है, जो कुछ हमसे छूट रहा है, महानगरीय जीवन की जो चकाचौध है, उसमें व्यक्ति की मनोस्थितियों व विडंबनाओं क्या व किस रूप मे है, आदि को चित्रित किया है।

इसके अतिरिक्त इतने अच्छे दिन 1970, कथा प्रस्थान 1990, कमलेश्वर की प्रेम कहानियाँ 1995, श्रेष्ट आंचलिक कहानियाँ 1997, चर्चित कहानियाँ 1997, दस प्रतिनिधि कहानियाँ 2001, कमलेश्वर समग्र कहानियाँ 2001, आजादी मुबारक 2002 कहानी संग्रहों का प्रकाशन हुआ।

यह कमलेश्वर द्वारा रचा गया उनका कथा साहित्य (उपन्यास व कहानी) रचना संसार है। जिसमे वातावरण, भावबोध, संवेदनाएं, कथ्य शिल्प, सब अपने नए रूप में है। और वह जीवन से लगातार जुड़ी रहती ही। कमलेश्वर कहते है कि, "आज की कहानियाँ कल्पना के पंखों पर नही उड़ती बल्कि दुनियाँ की व्यवहारिक और वास्तविक जिंदगी से उनका सीधा संबंध हैं।"40

कमलेश्वर की कहानियों में संघर्षरत व्यक्ति हमेशा मिल जाएगा, जो लगातार कहीं न कहीं किसी न किसी से लड़ रहा है। संघर्ष कर रहा है। और यही जीवन की हकीकत भी है की व्यक्ति ताउम्र संघर्षो में जीता रहता है। सुलझे हुए संघर्षो से टकराना तो ठीक है पर अनसुलझे संघर्षो से लड़ना बड़ा ही मुश्किल काम होता है। और जीवन में अनुभव की विविधता मिलेगी, क्योंकि स्वयं कमलेश्वर जी उन परिस्थितियों से गुजरे हुए कथाकार है। जहाँ पर अभाव हो, अस्तित्व हो, अस्मिता की लड़ाई लड़ी जा रही हो। यही सारी विविधाताएं उनकी कहानियों में जीवंतता व रक्त संचार का काम करती है। जिसमें उनकी लेखनी सदैव चलती रहती है। द्वारिका प्रसाद सक्सेना जी ने लिखा है कि, "कमलेश्वर ने प्रायः ऐसे ही केन्द्रीय पत्रों की तलाश की हैं, जो विभिन्न स्तरों को वहन करने की क्षमता रखते है और युग संक्रमण को झेलते हुए जीवन के यथार्थ के भोक्ता हैं।"41 यह कमलेश्वर के कहानियों के विषय वस्तु की की बात हुई। उनके संग्रह की बात हुई। और किस तरह के पात्र व परिस्थितियाँ है उनकी बात हुई। उनका कहानी साहित्य जीवन के विविध पक्षों को अभिव्यक्त करने वाला साहित्य है। कई तरह की संवेदना व विचार को प्रकट करने वाला साहित्य है।

अन्य विधाएं

नाटक

नाटक लेखन में भी कमलेश्वर जी ने प्रयास किए। जिसकी परिणिती यह हुई कि उनके द्वारा अधूरी आवाज, हिंदोस्ता हमारा, रेगिस्तान अप्रकाशित नाटकों का लेखन हो सका।

नाट्य रूपांतरण

चारुलता नवीन ठाकुर के नष्टनीड़ का रूपांतरण , गोदान, गबन, के साथ निर्मला का नाट्य रूपांतरण भी किया।

बेख्त के नाटक का खाड़िया का घेरा नाम से अनुवाद

तथा मोहन राकेश के अधूरे नाटक पैर तले की जमीन को इन्होंने पूर्ण किया था।

आलोचना

नयी कहानी की भूमिका, मेरा पन्ना, समानान्तर सोच, कथा संस्कृति आदि कमलेश्वर का आलोचनात्मक लेखन है।

यात्रा साहित्य

खंडित यात्राएं, बांग्लादेश की यात्राएं, देश देशान्तर, कश्मीर रात के बाद व चुनावों के मैदान कमलेश्वर का यात्रा साहित्य है।

आत्मकथात्मक संस्मरणपरक लेखन

जो मैंने जिया, यादों के चिराग व जलती हुई नदी इनका आत्मकथात्मक लेखन है।

पत्र संकलन

'तुम्हारा कमलेश्वर' नाम से उन्होंने अपने उन पत्रों को संकलित किया है जो पत्नी गायत्री को लिखते थे।

संपादक व संपादन

संपादक के रूप में कमलेश्वर इलाहाबाद से ही काम करना शुरू कर दिया था। और समय था उनके परास्नातक का जब उन्होंने पहली बार 'कहानी' पत्रिका मे सहायक संपादक के रूप में सन 1954 ई. में कार्य किया था। पूर्ण संपादक के रूप में उन्होंने सर्वप्रथम 1955 ई. में 'संकेत' में कार्य किया। इसके बाद में 'इंगित' का सम्पादन किया। जिसका समय है सन 1961 से 1963 ई.। यह दिल्ली से निकलने वाला साप्ताहिक पत्र था। यह पत्र समाचार को विचार की पीठिका के रूप में प्रस्तुत करता था। 'नई कहानियाँ' पत्रिका का सम्पादन उन्होंने 1963 से 1966 तक किया। कमलेश्वर सन 1967 ई. में 'सारिका' पत्रिका का सम्पादन कार्य संभाल था। जो टाइम्स ऑफ इंडिया की एक मासिक पत्रिका थी। यह अपने समय की सबसे चर्चित व प्रसिद्ध पत्रिका थी। कमलेश्वर के जुडने से और अधिक उचाइयों पर गयी। कमलेश्वर सबसे अधिक समय सन 1967 से 1978 ई. तक इस पत्रिका के संपादक के रूप में कार्य किया। इस पत्रिका में 'मेरा पन्ना' नामक कालम में वे जन सामान्य की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों को प्रकाशित करते रहते थे। इसके अतरिक्त 'कथा यात्रा' का सम्पादन 1978 से 1979 तक किया। 'श्री वर्षा' का सम्पादन 1979 से 1980 तक किया। 'गंगा' का सम्पादन 1984 से 1988 तक किया। इसके साथ ही 'नई धारा', 'कल्पना', विहान, 'बाहर', समानान्तर इत्यादि का सम्पादन कार्य किया।

दैनिक समाचार पत्रों का भी वे सम्पादन कार्य किया। जिसमे 'दैनिक जागरण' के संपादक रहे तो 'दैनिक भास्कर' (राजस्थान) में प्रधान संपादक बतौर कार्य किया। अजित पुष्कल का अभिमत है कि, "संपादक के रूप में भारतीय चिंतन एवं सम्मिलित भारतीय साहित्य के स्वरूप को भाषायी

सीमाओं के ऊपर ले जाकर एकात्म करने का जो ऐतिहासिक दायित्व कमलेश्वर ने निभाया है वह यथार्थवादी सोच और प्रगतिशील चिंतन की परंपरा की ही अगली कड़ी हैं।"42 देखे तो कमलेश्वर के पास सम्पादन का एक लंबा सफर है। जिसमें वे कभी विश्राम नही करते है। भले ही वे अपनी जगहे बदलते रहे पर संपादन का कार्य कभी नहीं छोड़ा। जहाँ वैचारिक मतभेद हुआ विचार नही मिले वहाँ नौकरी छोड़ दिया पर वे कभी किसी के विचारों में बधकर काम नही किया। और न अपने विचार बदले।

भारतीय शिखर कथा कोश का 30 भागों का संपादन का कार्य किया। जिसमें अलग-अलग भारतीय भाषाओ के साहित्यकारों की कहानियों का संकलित किया है।

कमलेश्वर के यदि पेशे की हमे पहचान करनी पड़े तो हम उनको एक संपादक के रूप मे याद करेगें। क्योंकि कमलेश्वर अपने जीवन मे सबसे अधिक कोई काम किया है तो वह संपादन का है। वह चाहे इलाहाबाद हो, दिल्ली हो, मुंबई हो या वापस दिल्ली का समय हो वे हर समय भले ही अलग-अलग काम करते रहे हो पर संपादक का काम वे कभी नहीं बंद किया। एक संपादक के रूप मे वे हमेशा काम किया। और सबसे अधिक किया। और इसके साथ वे अन्य काम किया। संपादन उनका पहला व प्रमुख कार्य है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में कमलेश्वर के व्यक्तित्व व कृतित्व का अध्ययन किया गया है। कमलेश्वर का व्यक्तित्व अपराजेय व्यक्तित्व है। वे शुरू से लेकर अंतिम समय तक अपने जीवन में संघर्ष करते रहे। उन्होंने जो कुछ भी अपने जीवन में अर्जित किया या वे जो कुछ भी थे वह उनके कठिन परिश्रम का परिणाम है। यह शून्य से शिखर की यात्रा थी उनकी। क्योंकि वे सब कुछ अपने बुद्धि,

विवेक, प्रतिभा व श्रम से अर्जित किया था। और वे जीवन की कठिनाइयों से भागने वाले नहीं बल्कि उनसे डटकर टक्कर लेने वाले साहसिक योद्धा थे। वे कभी किसी कार्य को टालते नही है जो जहाँ है उसे वही पर खत्म करना उनकी आदत थी। नौकरियां करना और छोड़ना जैसे उनके स्वभाव में आ गया था। भाषा में मिठास मृदुता उनका अपना गुण है। स्वाभिमान, धैर्य, महत्त्वाकांक्षा उनके अपने सबसे बड़े साथी है। सत्यता उनका अपना गुणधर्म है। जन पक्षधरता उनका अपना पक्ष है।

स्वतंत्रता के पश्चात देश जिन परिस्थितियों से और देश की जनता जिस मनोदशा से गुजर रही थी उसका चित्रण इनका साहित्य करता है। समाज की उझलने उसका भटकाव, उसका अकेलापन, संबंध विच्छेद, मूल्यों का हास, संवेदनहीनता, बने बनाए पैमानों का दरकना, प्रेम का अभाव, यानि देखे तो मनुष्य जीवन के लिए जो सबसे जरूरी व बुनियादी बातें है। वही जीवन से धीरे-धीरे गायब हो रही है। टूटते-विखरते, छत-विछत होते मूल्यों को कमलेश्वर लगातर रेखांकित कर रहे है। उन्हे टटोलते है। उनकी संजीदगी को देखते है। पर कहीं कुछ जैसे शेष नही बचा हो। सब कुछ सूख गया है। मृत प्राय हो गया हो। रिश्तों मे जैसे एक छल समा गया हो। बेमानी जैसे आज का मूल्य हो गया हो। पति-पत्नी के रिश्तों का विघटन अब मूल्य की तरह पेश आ रहा है। अब यह डर भय या बदनामी का कारण नहीं रह गया है। इस तरह बदले हुए जीवन मूल्यों को कमलेश्वर लगातार रेखांकित करते रहे है।

कमलेश्वर का व्यक्तित्व अभिभूत कर देने वाला अदभुद व्यक्तित्व था। वे सहजता, सादगी, संजीदगी के जीवंत उदाहरण थे। जीवन में कई तरह की विविधता के साथ व्यस्तता रखते थे। एक साथ कई काम करना उनका जैसे व्यसन हो गया था। यही कारण है कि उनका लेखन एक रेखीय लेखन नहीं है। उसमें कई तरह की लड़ियाँ है। कई तरह की उछाह है। कई तरह के उसमे चिंतन

है, विचार है, समाज का चित्र है, व्यक्ति का चित्र है। उनके लेखन का वलय वृत समाज की स्थितियाँ-परिस्थितियाँ व विसंगतियाँ थी। समय की गति में परिवर्तित होती समाज की प्रवृतियाँ है। मनुष्य व व्यक्ति की प्रवृतियाँ है। उनका लेखन एक बड़े साहित्यकार का विशाल लेखन है। लेकिन वह सिर्फ लेखन नहीं है बल्कि अपने समय का दस्तावेज भी है। जिसमें उनके समय की धड़कन है, उसका कोलाहल है, उसकी करुणा, उसकी वेदना है, उसका राग, उसका अनुराग है। व्यक्ति की विवशता व समाज का निखालिस यथार्थ रूप है। कृतित्व के संख्यात्मक, गुणात्मक व विधात्मक दृष्टि से भी कमलेश्वर अत्यंत सफल व समृद्ध साहित्यकार है।

संदर्भ

1.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृष्ठ 2

2.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृष्ठ 7

3.अमरनाथ कमलेश्वर जैसे लोग कभी नही मरते कल्पांत मार्च 2007 पृ.7

4.डॉ.करुणा शर्मा कमलेश्वर के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श नवचेतन प्रकाशन संस्करण 2011 पृ.254

5.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.4

6.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.4

7.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.4

8.डॉ.सुधारानी सिंह कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी वाणी प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.27

9.कमलेश्वर गर्दिश के दिन राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 1980 पृ.152

10.कमलेश्वर गर्दिश के दिन राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 1980 पृ.152

11.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.3

12.डॉ.सुधारानी सिंह कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी वाणी प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.30

13.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.5

14.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.5

15.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.5

16.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.7

17.डॉ.सुधारानी सिंह कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी वाणी प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.74

18.डॉ.वंदना अग्निहोत्री कमलेश्वर का रचना संसार पब्लिकेशन इंदौर प्रकाशन संस्करण 2019 पृ. 12

19.डॉ.सुधारानी सिंह कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी वाणी प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.**78**

20.डॉ.सुधारानी सिंह कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी वाणी प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.78

21.डॉ.वंदना अग्निहोत्री कमलेश्वर का रचना संसार पब्लिकेशन इंदौर प्रकाशन संस्करण 2019 पृ.20

22.डॉ.सुधारानी सिंह कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी वाणी प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.49

23.डॉ.वंदना अग्निहोत्री कमलेश्वर का रचना संसार पब्लिकेशन इंदौर प्रकाशन संस्करण 2019 पृ. 1

24.कमलेश्वर नयी कहानी की भूमिका राजकमल प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.13

25.कमलेश्वर नयी कहानी की भूमिका राजकमल प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.17

26.घनश्याम मधुप हिन्दी लघु उपन्यास राधाकृष्ण प्रकाशन संस्करण 1971 पृ.160

27.कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.9

28.डॉ.सुधारानी सिंह कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी वाणी प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.50

29.कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.258

30.कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.238

31.कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.366

32.कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.394

33.कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.563

34.कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.357

35.मधुकर सिह संपादक कमलेश्वर शब्दकार प्रकाशन संस्करण 1977 पृ.7

36.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.2

37.कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.13

38.डॉ.मिनी जार्ज कमलेश्वर का कथा साहित्य:समकालीन समस्याओं का जीवंत आलेख अमन प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.34

39.डॉ.मिनी जार्ज कमलेश्वर का कथा साहित्य:समकालीन समस्याओं का जीवंत आलेख अमन प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.34

40.डॉ.मिनी जार्ज कमलेश्वर का कथा साहित्य:समकालीन समस्याओं का जीवंत आलेख अमन प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.35

41.डॉ.मिनी जार्ज कमलेश्वर का कथा साहित्य:समकालीन समस्याओं का जीवंत आलेख अमन प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.36

42.डॉ.सुधारानी सिंह कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी वाणी प्रकाशन संस्करण 2013 पृ.75